॥ राधेति मे जीवनम् ॥

राधा माहात्म्य

(श्रीराधा नाम महिमा)

संकलन व सम्पादन

बरसाना शरण

प्रकाशक

श्री मान मंदिर सेवा संस्थान

गह्वरवन, बरसाना-281405 (मथुरा) उ.प्र.

प्रथम संस्करण 1000 प्रतियाँ
प्रकाशित 9 अक्टूबर 2022
शरद पूर्णिमा, आश्विन शुक्लपक्ष, विक्रम संवत् 2079

http://www.maanmandir.org
E-mail – info@maanmandir.org

प्राप्ति-स्थान
श्री मान मंदिर, बरसाना
मो0 9927338666
एवं
श्रीराधा खंडेलवाल ग्रन्थालय
अठखम्बा बाजार, वृन्दावन
मो0 9997977551

सम्पादकीय निवेदन

सच्चिदानंदघन समग्र ऐश्वर्य, माधुर्य-रस-सिन्धु ब्रजेन्द्रनन्दन राधावल्लभ भगवान् श्रीकृष्ण ही सर्वेश्वर, सर्वाधार व सर्वाराध्य हैं, अनादि अपौरुषेय वेदोपनिषदादि एवं ऋषि-महर्षियों के द्वारा प्रणीत व निर्णीत श्रुति-स्मृति सिद्धान्तों में श्रीकृष्ण का ही सर्वेश्वरत्व एवं सर्वकारणत्व सिद्ध है। वह सर्वेश्वर सर्वकारण कारण परात्परतत्त्व श्रीकृष्ण ही अनादि नित्यसिद्ध दम्पति श्रीराधा-माधवरूप से दो रूपों में प्रकट हैं; अर्थात् एक ही परिपूर्ण नित्य सच्चिदानंदमय परम प्रेमतत्त्व श्रीकृष्ण ही आस्वाद्य, आस्वादक व आस्वादन बनकर लीलारत है। लीलारस के आस्वादन के लिए नित्य ही उनके दो रूप हैं –

रसो यः परमानन्द एक एव द्विधा सदा।
श्रीराधाकृष्णरूपाभ्यां तस्यै तस्मै नमो नमः॥

श्रीराधा श्रीकृष्ण की ही अभिन्नस्वरूपा हैं। श्रीकृष्ण का हृदयगत प्रेम या आनंद ही श्रीराधा के रूप में अभिव्यक्त है। श्रीराधा-कृष्ण नित्य एक और अभिन्न हैं, दोनों का नित्य अविच्छेद्य सम्बन्ध है, दोनों का नित्य एकत्व है तथापि श्रीराधा का प्राधान्य है। वे रासेश्वरी रसदात्री वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा श्रीकृष्ण की भी आत्मा, आराध्या, उपास्या, उनसे भी परज्योति हैं।

अतएव 'राधा'–इस द्व्यक्षर नाम की महिमा भी सर्वोपरि, सर्वथा अवर्णनीय, अगम्य व अनुपमेय है; क्योंकि यह श्रीराधा-नाम अखिल सारों का भी सार, समस्त वेदों का छिपा हुआ धन, समस्त मन्त्रों का मुकुटमणि मंत्र, निगमागम से भी परे, परम गोपनीय है। पूर्णतम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण भी श्रीराधा-नाम का पार नहीं पा सकते। यह राधा-नाम ही वह मंत्र है जो साक्षात् आनंदकंद श्रीकृष्णचंद्र के मन को भी मोह लेता है एवं जिसे वह क्षणार्ध के लिए भी विस्मृत नहीं करते। रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण अगणित रूप धारण करके निशि-दिन इस

अद्भुत परम प्रिय राधा-नाम को ही जपते हैं, सुनते हैं एवं हर्षपूर्वक प्रेम में विभोर होकर मुरली में 'राधा-राधा' गाते हैं। राधा-नाम के कथन-श्रवण से ही उन्हें परम सुख मिलता है। जो अनन्य श्रीराधा-नामोपासक होता है उसके श्रीकृष्ण ऋणी हो जाते हैं; यदि स्वप्न में भी कोई राधा-नाम पुकारता है तो श्रीकृष्ण उस जीव के समीप आने पर विवश हो जाते हैं। श्रीकृष्ण का परम आकर्षक मन्त्र होने के कारण ब्रज-वृन्दावनवासियों का उपास्य, कीर्तनीय, जप्य, श्रोतव्य और स्मर्तव्य श्रीराधानाम है, उनकी जिह्वा पर राधानाम निरंतर विराजमान रहता है। कहाँ तक कहें श्रीराधानाम ब्रज-वृन्दावनधाम के प्रत्येक जीव की प्राण संजीवनी है।

इस गूढ़ रहस्य को जानकर हमें श्रीराधानामामृत को प्राण-जीवन-सर्वस्व एवं परमधन बना लेना चाहिए; क्योंकि श्रीराधा-रूप को प्रकाशित करने वाला, निभृतनिकुंजभवन के सर्वोपरि नित्यविहार-प्रेमरस की प्राप्ति कराने वाला, रस की निधि एवं करोड़ों साधनाओं को हेय करने वाला श्रीराधा-नाम है। अतः अन्य समस्त श्रेष्ठातिश्रेष्ठ साधनों से नैराश्य धारण करके, बस प्रत्येक स्वाँस के साथ 'श्रीराधा-राधा' नाम का रटन ही हमारा साधन-साध्य बन जाना चाहिए।

अस्तु, श्रीराधारानी के नित्य-निवास-स्थल श्रीबरसाना धाम में विराजित अनन्य ब्रज-धामनिष्ठ एवं श्रीराधा-नामनिष्ठ ब्रज विभूति **परम विरक्त संत श्रीरमेश बाबा जी महाराज** की प्रेरणा, मार्गदर्शन, अतिशय अनुग्रह एवं छत्रछाया में **'राधा-माहात्म्य' (श्रीराधा-नाम महिमा)** नामक ग्रन्थ का रसिक महानुभावों के आनंदवर्द्धनार्थ शरद पूर्णिमा के पावन पर्व पर श्री मान मंदिर सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। जो कि श्रीराधा-नामानुरागी नाम-रसिकजनों के श्रीचरणों में सादर समर्पित है। साथ ही मैं उन सभी रसिकाचार्यों-रसिकमहापुरुषों व उनकी वाणियों के प्रति अतिशय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि जिनका आश्रय लेकर के श्रीराधा-नाम महिमा का संकलन किया गया है।

श्रीधाम बरसाना — श्रीराधारसरसिककृपाकांक्षी

शरद पूर्णिमा, वि.सं. २०७९ — बरसाना शरण

'राधा' शब्द की व्युत्पत्ति

राध्यते आराध्यते श्रीकृष्णेनेति राधा

श्रीकृष्ण के द्वारा जिनकी आराधना की जाती है, वे राधा हैं।

राधयति आराधयति श्रीकृष्णमिति राधा

जो श्रीकृष्ण की आराधना करती हैं, उन्हें राधा कहते हैं।

राधयति वशीकरोति कृष्णमिति राधा

जो कृष्ण को वश में करती हैं, वह हैं राधा।

राध्यते आराध्यते भक्तजनैरिति राधा

भक्तों के द्वारा जिनकी आराधना की जाती हैं, वह हैं राधा।

राधयति साधयति सर्वं कार्यं स्वभक्तानामिति राधा

जो भक्तों के सभी कार्यों को साधती हैं-सिद्ध करती हैं, वह राधा हैं।

राध्यते आराध्यते श्रीकृष्णप्राप्त्यर्थं सर्वैरिति राधा
(तदाराधनं विना कृष्णप्राप्तेर्दुर्लभत्वात्)

सभी (भक्तजनों) के द्वारा श्रीकृष्णप्राप्ति के लिए जिनकी अराधना की जाती है, वे राधा हैं। (क्योंकि उनकी आराधना के बिना श्रीकृष्ण प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है।)

'राधा' शब्द की निष्पत्ति

'राधा' शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों में कई धातुओं से निष्पन्न होता है; यथा –

राध् संसिद्धौ, राध आराधने, राधो हिंसायाम्, राध वृद्धौ, रा दाने धा धारणे, राध-द्रोहे, राध-पर्यालोचने, राध-पाके...आदि।

वैदिक साहित्य में श्रीराधा-नाम महिमा

'रा' शब्दोच्चारणाद् भक्तो राति मुक्तिं सुदुर्लभाम्।
'धा' शब्दोच्चारणाद् दुर्गे धावत्येव हरेः पदम्॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड 48.40)

भगवान् शंकर पार्वती जी से कहते हैं – हे दुर्गे! भक्त पुरुष 'रा' शब्द के उच्चारण से परम दुर्लभ मुक्ति-पद को प्राप्त करता है और 'धा' शब्द के उच्चारण से निश्चय ही वह दौड़कर श्रीहरि के चरणों में अर्थात् श्रीहरि के धाम में पहुँच जाता है।

'रा' इत्यादानवचनो 'धा' च निर्वाणवाचकः।
ततोऽवाप्नोति मुक्तिं च तेन राधा प्रकीर्तिता॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड 48.42)

'रा' शब्द का अर्थ है 'पाना' और 'धा' शब्द का अर्थ है निर्वाण (मोक्ष); अतः भक्तजन राधा नाम के उच्चारण से निर्वाण-मुक्ति प्राप्त करते हैं, इसलिये उन्हें 'राधा' कहा गया है।

आदौ राधां समुच्चार्य पश्चात्कृष्णं वदेद्बुधः।
व्यतिक्रमे ब्रह्महत्यां लभते नात्र संशयः॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड 49.61)

विद्वान् पुरुष को पहले 'राधा' नाम का उच्चारण करके पश्चात् 'कृष्ण' नाम का उच्चारण करना चाहिये। इस क्रम से उलट-फेर करने पर वह ब्रह्महत्या जैसे पाप का भागी होता है, इसमें संशय नहीं है।

आदौ राधां समुच्चार्य पश्चात्कृष्णं च माधवम्।
प्रवदन्ति च वेदेषु वेदविद्भिः पुरातनैः॥

विपर्ययं ये वदन्ति ये निन्दन्ति जगत्प्रसूम्।
कृष्णप्राणाधिकां प्रेममयीं शक्तिं च राधिकाम्॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड 54.179)

प्राचीनकाल के वेदवेत्ता विद्वान् वेदों के कथनानुसार पहले राधा नाम का उच्चारण करके पीछे कृष्ण या माधव कहते हैं। जो इसके विपरीत उच्चारण करते या उन जगज्जननी श्रीकृष्णप्राणाधिका एवं प्रेममयी शक्ति श्रीराधिका की निन्दा करते हैं, वे चन्द्रमा तथा सूर्य की स्थितिपर्यन्त कालसूत्र नरक में यातना भोगते हैं। तत्पश्चात् सौ वर्षों तक स्त्री-पुत्र से रहित तथा रोगी होते हैं।

****

राधाकृष्णेति कृष्णेति प्रजपंतो दिवानिशम्।
तेषां श्रीकृष्णभक्तानां निवासैः सुमनोहरैः॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 4.138)

भगवान् नारायण देवर्षि नारद जी से कहते हैं – मुने! जो सोते, जागते हर समय अर्थात् दिन-रात 'राधाकृष्ण', 'श्रीकृष्ण' इत्यादि नामों का जप किया करते हैं; उन श्रीराधाकृष्ण के भक्तों के लिये वहाँ गोलोक धाम में बड़े मनोहर निवासस्थान बने हुए हैं।

****

राधाशब्दस्य व्युत्पत्तिः सामवेदे निरूपिता॥
नारायणस्तामुवाच ब्रह्माणं नाभिपंकजे।
ब्रह्मा तां कथयामास ब्रह्मलोके च शंकरम्॥
पुरा कैलासशिखरे मामुवाच महेश्वरः।
देवानां दुर्लभां नंद निशामय वदामि ते॥
सुरासुरमुनींद्राणां वांछितां मुक्तिदां पराम्।

श्रीगर्गाचार्य जी नन्दबाबा से कहते हैं – सामवेद में 'राधा' शब्द की व्युत्पत्ति बतायी गयी है। पहले नारायणदेव ने अपने नाभि-कमल पर बैठे हुए ब्रह्माजी को वह व्युत्पत्ति बतायी थी। फिर ब्रह्माजी ने ब्रह्मलोक में भगवान् शंकर को उसका उपदेश दिया। नन्द! तत्पश्चात् पूर्वकाल में कैलास-शिखर पर विराजमान महेश्वर ने मुझको वह व्युत्पत्ति बतायी, जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। मैं उसका वर्णन करता हूँ। 'राधा' शब्द की व्युत्पत्ति देवताओं, असुरों और मुनीन्द्रों को भी अभीष्ट है तथा वह सबसे उत्कृष्ट एवं मोक्षदायिनी है।

रेफो हि कोटिजन्माघं कर्मभोगं शुभाशुभम्॥
आकारो गर्भवासं च मृत्युं च रोगमुत्सृजेत्।
धकार आयुषो हानिमाकारो भवबन्धनम्॥
श्रवणस्मरणोक्तिभ्यः प्रणश्यति न संशयः।
रेफो हि निश्चलां भक्तिं दास्यं कृष्णपदाम्बुजे॥
सर्वेप्सितं सदानन्दं सर्वसिद्धौघमीश्वरम्।
धकारः सहवासं च तत्तुल्यकालमेव च॥
ददाति सार्ष्टिसारूप्यं तत्त्वज्ञानं हरेः समम्।
आकारस्तेजसां राशिं दानशक्तिं हरौ यथा॥
योगशक्तिं योगमतिं सर्वकालं हरिस्मृतिम्।
श्रुत्युक्तिस्मरणाद्योगान्मोहजालं च किल्बिषम्॥
रोगशोकमृत्युयमा वेपन्ते नात्र संशयः।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 13.102-111)

राधा शब्द का 'रेफ' करोड़ों जन्मों के पाप तथा शुभाशुभ कर्मभोग से छुटकारा दिलाता है। 'आकार' गर्भवास, मृत्यु तथा रोग को दूर करता है। 'धकार' आयु की हानि का और 'आकार' भवबन्धन का निवारण करता है।

राधा नाम के श्रवण, स्मरण और कीर्तन से उक्त सारे दोषों का नाश हो जाता है; इसमें संशय नहीं है।

राधा नाम का 'रकार' श्रीकृष्ण के चरणारविन्दों में निश्चला भक्ति तथा दास्य प्रदान करता है। 'आकार' सर्ववांछित, सदानन्दस्वरूप, सम्पूर्ण सिद्धसमुदायरूप एवं ईश्वर की प्राप्ति कराता है। 'धकार' श्रीहरि के साथ उन्हीं की भाँति अनन्त काल तक सहवास का सुख, समान ऐश्वर्य, सारूप्य तथा तत्त्वज्ञान प्रदान करता है। 'आकार' श्रीहरि की भाँति तेजोराशि, दानशक्ति, योगशक्ति, योगमति तथा सर्वदा श्रीहरि की स्मृति का अवसर देता है।

श्रीराधा नाम के श्रवण, स्मरण और कीर्तन का सुयोग मिलने से मोहजाल, पाप, रोग, शोक, मृत्यु और यमराज सभी काँप उठते हैं; इसमें संशय नहीं है।

****

राशब्दं कुर्वतस्त्रस्तो ददामि भक्तिमुत्तमाम्।
धाशब्दं कुर्वतः पश्चाद्यामि श्रवणलोभतः॥
ये सेवन्ते च दत्त्वा मामुपचारांश्च षोडश।
यावज्जीवनपर्यन्तं या प्रीतिर्जायते मम॥
सा प्रीतिर्मम जायेत राधाशब्दात्ततोऽधिका।
प्रिया न मे तथा राधे राधावक्ता ततोऽधिकः॥
ब्रह्मानन्तः शिवो धर्मो नरनारायणावृषी।
कपिलश्च गणेशश्च कार्त्तिकेयश्च मत्प्रियः॥
लक्ष्मीः सरस्वती दुर्गा सावित्री प्रकृतिस्तथा।
मम प्रियाश्च देवाश्च तास्तथापि न तत्समाः॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 15.70-74)

(परमप्रिय श्रीराधा-नाम की महिमा का गुणगान करते हुए) स्वयं श्रीकृष्ण श्रीराधारानी से कहते हैं – जिस समय मैं किसी के मुख से 'रा' शब्द सुन लेता हूँ, उसी समय उसे अपनी उत्तमा भक्ति–प्रेम प्रदान कर देता हूँ और 'धा' शब्द का उच्चारण करने पर तो मैं प्रियतमा श्रीराधा का नाम-श्रवण करने के लोभ से उसके पीछे-पीछे चलने लगता हूँ कि पुनः 'राधा' नाम सुनने को मिल जाय।

जो जीवनपर्यन्त षोडश उपचार अर्पण करके मेरी सेवा करते हैं, उन पर मेरी जो प्रीति होती है, वही प्रीति 'राधा' शब्द के उच्चारण से होती है। बल्कि उससे भी अधिक प्रीति 'राधा' नाम लेने से होती है।

राधे! मुझे तुम उतनी प्रिया नहीं हो, जितना तुम्हारा नाम लेने वाला प्रिय है। 'राधा' नाम का उच्चारण करने वाला पुरुष मुझे 'राधा' से भी अधिक प्रिय है।

ब्रह्मा, अनन्त, शिव, धर्म, नर-नारायण ऋषि, कपिल, गणेश और कार्तिकेय भी मेरे प्रिय हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, सावित्री, प्रकृति–ये देवियाँ तथा देवता भी मुझे प्रिय हैं; तथापि वे राधा नाम का उच्चारण करने वाले भक्तों के समान प्रिय नहीं हैं।

****

राधेत्येवं च संसिद्धौ राकारो दानवाचकः।
स्वयं निर्वाणदात्री या सा राधा परिकीर्तिता॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 17.223)

श्रीनारायण भगवान् देवर्षि नारद जी से कहते हैं – राधा शब्द में 'धा' का अर्थ है संसिद्धि (निर्वाण) तथा 'रा' दानवाचक है। जो स्वयं निर्वाण (मोक्ष) प्रदान करने वाली हैं; वे 'राधा' कही गयी हैं।

****

नारद उवाच

आदौ राधां समुच्चार्य पश्चात्कृष्णं विदुर्बुधाः।
निमित्तमस्य मां भक्तं वद भक्तजनप्रिय॥

श्रीनारायण उवाच

निमित्तमस्य त्रिविधं कथयामि निशामय।
जगन्माता च प्रकृतिः पुरुषश्च जगत्पिता॥
गरीयसी त्रिजगतां माता शतगुणैः पितुः।
राधाकृष्णेति गौरीशेत्येवं शब्दः श्रुतौ श्रुतः॥
कृष्णराधेशगौरीति लोके न च कदा श्रुतः।
प्रसीद रोहिणीचन्द्र गृहाणार्घ्यमिदं मम॥
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सह भास्कर।
प्रसीद कमलाकान्त गृहाण मम पूजनम्॥
इति दृष्टं सामवेदे कौथुमे मुनिसत्तम।
राशब्दोच्चारणादेव स्फीतो भवति माधवः॥
धाशब्दोच्चारतः पश्चाद्धावत्येव ससंभ्रमः।
आदौ पुरुषमुच्चार्य पश्चात्प्रकृतिमुच्चरेत्॥
स भवेन्मातृघाती च वेदातिक्रमणे मुने।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 52.33-40)

देवर्षि नारदजी ने पूछा–भक्तजनों के प्रियतम नारायण! विद्वान् पुरुष पहले 'राधा' शब्द का उच्चारण करके पीछे 'कृष्ण' का नाम लेते हैं, इसका क्या कारण है? यह मुझ भक्त को बताइये।

श्रीनारायण भगवान् बोले–नारद! इसके तीन कारण हैं; बताता हूँ, सुनो! प्रकृति जगत् की माता हैं और पुरुष जगत् के पिता। त्रिभुवनजननी प्रकृति का गौरव पितृस्वरूप पुरुष की अपेक्षा सौगुना अधिक है। श्रुति में

'राधाकृष्ण', 'गौरीशंकर' इत्यादि शब्द ही सुना गया है। 'कृष्ण-राधा', 'शंकर-गौरी' इत्यादि का प्रयोग कभी लोक में भी नहीं सुना गया है। 'हे रोहिणीचन्द्र! प्रसन्न होइये और इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिये। संज्ञासहित सूर्यदेव! मेरे दिये हुए इस अर्घ्य को स्वीकार कीजिये। कमलाकान्त! प्रसन्न होइये और मेरी पूजा ग्रहण कीजिये।'–इत्यादि मन्त्र सामवेद की कौथुमीशाखा में देखे गये हैं।

मुनिश्रेष्ठ नारद! 'रा' शब्द के उच्चारण से उसे सुनते ही माधव हर्ष से फूल जाते हैं और 'धा' शब्द का उच्चारण करने पर तो निश्चित ही भक्त के पीछे-पीछे वेगपूर्वक (राधा नाम सुनने के लोभ से) दौड़ पड़ते हैं।

जो पहले पुरुषवाची शब्द का उच्चारण करके पीछे प्रकृति का उच्चारण करता है, वह वेद की मर्यादा का उल्लंघन करने के कारण मातृहत्या के पाप का भागी होता है।

****

राशब्दश्च महाविष्णुर्विश्वानि यस्य लोमसु।
विश्वप्राणिषु विश्वेषु धा धात्री मातृवाचकः॥
धात्री माताहमेतेषां मूलप्रकृतिरीश्वरी।
तेन राधा समाख्याता हरिणा च पुरा वुधैः॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 111.57-58)

श्रीराधारानी यशोदा मैया से कहती हैं – जिनके रोमकूपों में अनेकों विश्व वर्तमान हैं, वे महाविष्णु ही 'रा' शब्द हैं और 'धा' विश्व के प्राणियों तथा लोकों में मातृवाचक धाय है; अतः मैं इनकी दूध पिलाने वाली माता, मूलप्रकृति और ईश्वरी हूँ। इसीलिये पूर्वकाल में श्रीहरि तथा विद्वानों ने मेरा नाम 'राधा' रखा है।

****

आदौ राधां समुच्चार्य पश्चात्कृष्णं परात्परम्॥
स एव पण्डितो योगी गोलोकं याति लीलया।
जगतां भवती माता परमात्मा पिता हरिः।
पितुरेव गुरुर्माता पूज्या वन्द्या परात्परा॥
भजते देवमन्यं वा कृष्णं वा सर्वकारणम्।
पुण्यक्षेत्रे महामूढो यदि निन्दति राधिकाम्॥
वंशहानिर्भवेत्तस्य दुःखशोकमिहैव च।
पच्यते निरये घोरे यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 124.9-13)

श्रीगणेश जी ने श्रीराधारानी से कहा – जो बुद्धिमान् योगी पहले 'राधा' फिर परात्पर 'कृष्ण' अर्थात् 'राधा-कृष्ण' नाम का सम्यक् उच्चारण करता है; वह अनायास ही गोलोक धाम में चला जाता है। तुम लोकों की माता और परमात्मा श्रीहरि पिता हैं; परन्तु माता पिता से भी बढ़कर श्रेष्ठ, पूज्य, वन्दनीय और परात्पर होती है।

इस पुण्यक्षेत्र भारतवर्ष में यदि कोई मन्दमति पुरुष सबके कारणस्वरूप श्रीकृष्ण अथवा किसी अन्य देवता का भजन करता है और श्रीराधिका की निन्दा करता है तो वह इस लोक में दुःख-शोक का भागी होता है और उसका वंशोच्छेद हो जाता है तथा परलोक में सूर्य और चन्द्रमा की स्थितिपर्यन्त वह घोर नरक में पचता है।

****

राधाराधेति यो ब्रूयात् स्मरणं कुरुते नरः।
सर्व्वतीर्थेषु संस्कारात् सर्व्वविद्याप्रयत्नवान्॥
राधाराधेति कुर्य्यात्तु राधाराधेति पूजयेत्।
राधाराधेति यन्निष्ठा राधाराधेति जल्पति।

वृन्दारण्ये महाभागा राधासहचरी भवेत्॥
तदालापं कुरुष्वैव जपस्व मन्त्रमुत्तमम्।
अहर्निशं महाभाग कुरु राधेति कीर्त्तनम्॥
राधेति कीर्त्तनं कुर्य्यात् कृष्णेन सह यो जनः।
तन्माहात्म्यं न शक्येऽहं वक्तुं शेषोऽत्र नैव च॥

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, अ. 163)

श्रीशिव जी देवर्षि नारद से कहते हैं – जो मनुष्य 'राधा-राधा' कहता है तथा स्मरण करता है, वह सब तीर्थों के संस्कार से युक्त होकर सब प्रकार की विद्या की प्राप्ति में प्रयत्नवान् बनता है।

जो राधा-राधा कहता है, राधा-राधा कहकर पूजा करता है, राधा-राधा में जिसकी निष्ठा है, जो राधा-राधा नाम उच्चारण करता रहता है, वह महाभाग श्रीवृन्दावन में श्रीराधा की सहचरी (सखी, दासी) होता है।

हे महाभाग! उनका कथा-कीर्तन करो, उनके उत्तम मन्त्र का जप करो और रात-दिन राधा-राधा बोलते हुए नाम-कीर्तन करो।

जो मनुष्य कृष्ण के साथ राधा का (अर्थात् राधेकृष्ण, राधेकृष्ण) नाम-कीर्तन करता है, उसके माहात्म्य का वर्णन मैं नहीं कर सकता और न उसका पार पा सकता हूँ।

****

दंपती ऊचतुः

राधाशब्दस्य हे ब्रह्मन् व्याख्यानं वद तत्त्वतः।
त्वत्तो न संशयच्छेत्ता कोऽपि भूमौ महामुने॥

श्रीगर्ग उवाच

सामवेदस्य भावार्थं गंधमादनपर्वते।
शिष्येणापि मया तत्र नारायणमुखाच्छ्रुतम्॥

रमया तु रकारः स्यादाकारस्त्वादिगोपिका।
धकारो धरया हि स्यादाकारो विरजा नदी॥
श्रीकृष्णस्य परस्यापि चतुर्द्धा तेजसोऽभवत्।
लीलाभूः श्रीश्च विरजा चतस्रः पत्न्य एव हि॥
संप्रलीनाश्च ताः सर्वा राधायां कुंजमंदिरे।
परिपूर्णतमां राधां तस्मादाहुर्मनीषिणः॥
राधाकृष्णेति हे गोप ये जपंति पुनः पुनः।
चतुष्पदार्थं किं तेषां साक्षात्कृष्णोऽपि लभ्यते॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड 15.66-71)

दम्पति श्रीवृषभानु बाबा एवं कीर्ति मैया बोले – ब्रह्मन्! 'राधा' शब्द की तात्त्विक व्याख्या बताइये। महामुने ! इस भूतल पर संदेह को दूर करने वाला आपके समान दूसरा कोई नहीं है।

श्रीगर्गाचार्यजी ने कहा – एक समय की बात है, मैं गन्धमादन पर्वत पर गया। साथ में शिष्यवर्ग भी थे। वहीं भगवान् नारायण के श्रीमुख से मैंने सामवेद का यह सारांश सुना है।

'रकार' से रमा का, 'आकार' से गोपिकाओं का, 'धकार' से धरा का तथा 'आकार' से विरजा नदी का ग्रहण होता है। परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण का सर्वोत्कृष्ट तेज चार रूपों में विभक्त हुआ–लीला, भू, श्री और विरजा; ये चार पत्नियाँ ही उनका चतुर्विध तेज हैं। ये सब-की-सब कुञ्जभवन में जाकर श्रीराधिकाजी के श्रीविग्रह में लीन हो गयीं; अतः विज्ञजन श्रीराधा को 'परिपूर्णतमा' कहते हैं।

गोप! जो मनुष्य बारम्बार 'राधा-कृष्ण' इस नाम का उच्चारण करते हैं, उन्हें चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) तो क्या, साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण भी सुलभ हो जाते हैं।

राधा राधेति राधेति राधाकृष्णेति वै पुनः।
प्रत्यहं पठ पाञ्चालि फलं नाम सहस्रकम्॥

(वृहन्नारदीय पुराण)

हे द्रौपदी! 'राधा! राधा!, राधा-कृष्ण!'–इन नामों का सदैव बार-बार उच्चारण करो-कीर्तन करो। क्योंकि एक बार 'राधा' कहने से श्रीविष्णु सहस्रनाम के पाठ का फल मिलता है।

****

राधानाम परं पुण्यं राधानाम परं धनम्।
राधानाम परं ज्ञानं राधानाम परं तपः॥

(वृहद् ब्रह्मपुराण)

राधा-नाम परम पवित्र है, राधा नाम ही परम धन है, राधा नाम परम ज्ञान और राधा नाम ही परम तप है।

****

मम नाम सहस्राणि राधानाम सकृत् स्मरन्।
मुच्यते भवतो जापे न जाने तस्य किं फलम्॥

(वृहद् वामन पुराण)

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो पुरुष मेरे एक हजार नामों को जपता है किन्तु राधा-नाम का एक बार ही स्मरण कर लेता है, वह भवबंधन से छूट जाता है और सदा-सर्वदा राधा-नाम जपने वाले के फल का तो कोई वर्णन ही नहीं हो सकता है कि उसे क्या फल मिलता है।

****

राधे राधेति राधेति परं मंत्रमुपासते।
निविष्टः कुञ्जभवने एकाकी तव वल्लभे॥

(आदिपुराण)

हे राधे! तुम्हारे प्राण-प्रियतम श्रीकृष्ण अकेले एकांत निकुंजभवन में जाकर वहाँ 'राधा-राधा' इस परम मन्त्र की उपासना करते हैं।

****

पूजा राधा जपो राधा राधिका चाभिवन्दने।
स्मृतौ राधा शिरो राधा राधैवाराध्यते मया॥

(ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत, श्रीराधास्तोत्रम्)

श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रीराधा ही मेरी पूजा हैं, श्री राधा-नाम का ही मैं जप करता हूँ, श्रीराधा का ही मैं अभिनंदन करता हूँ, मेरी स्मृति में एवं शिर पर भी श्रीराधा हैं–इस प्रकार सर्वत्र श्रीराधा की ही मैं आराधना करता हूँ।

जिह्वाग्रे राधिकानाम नेत्राग्रे राधिकातनुः।
कर्णे च राधिका-कीर्तिर्मानसे राधिका सदा॥

(ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत, श्रीराधास्तोत्रम्)

(श्रीकृष्ण आकाँक्षा करते हुए कहते हैं–) मेरी जिह्वा के अग्रभाग पर सदैव श्रीराधा-नाम विराजमान रहे, नेत्रों के आगे श्रीराधा की ही मूर्ति (छवि) रहे, कानों को सदा-सर्वदा श्रीराधा महारानी की कीर्ति (कथा) सुनने को मिले एवं मन में सदैव राधिका ही स्मरण रूप से विराजमान रहें।

****

यत्र वृन्दावने पुण्ये नरनारीप्लवंगमाः।
कृमिकीटपतंगाद्याः खगा वृक्षा नगा मृगाः।
समुच्चरंति सततं राधाकृष्णेति मोहिनि॥

(नारद पुराण, उत्तरार्द्ध 80.82)

परम पावन श्रीवृन्दावन-धाम के नर-नारी, वानर, कृमि, कीट-पतंग, खग (पक्षी), मृग (पशु), वृक्ष और पर्वत भी निरन्तर श्रीराधा-कृष्ण नाम का उच्चारण (संकीर्तन) करते रहते हैं।

राशब्दोच्चारणाद् भक्तो भक्तिं मुक्तिं च राति सः।
धाशब्दोच्चारणेनैव धावत्येव हरेः पदम्॥

(नारद पाञ्चरात्र 2.3.38)

'रा' शब्द के उच्चारण से भक्त को (अत्यन्त दुर्लभा) भक्ति और मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है तथा 'धा' शब्द के उच्चारण से वह हरि-पद की ओर शीघ्र गमन करता है अर्थात् भगवान् के चरणों की दास्यरति प्राप्त करता है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव पुनः पुनः।
विना राधा प्रसादेन मत्प्रसादो न विद्यते॥

(नारद पाञ्चरात्र)

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं बार-बार शपथ पूर्वक कहता हूँ कि श्रीराधा की कृपा के बिना मेरी कृपा (प्रसन्नता) प्राप्त नहीं हो सकती है।

****

मम नाम शतेनैव राधा नाम सकृत् समम्।
यः स्मरेत्तु सदा राधां न जाने तस्य किं फलम्॥

(कुलदीपिका)

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरे सौ नाम और एक राधा-नाम का समान फल है अर्थात् सौ बार 'कृष्ण' कहना और एक बार 'राधा' कह देना बराबर है। किन्तु जो पुरुष सदा-सर्वदा श्रीराधा-नाम का स्मरण-कीर्तन करते हैं, उनको क्या फल मिलता है, इसको मैं भी नहीं जानता (उनकी महिमा अवर्णनीय है)।

****

राधानाम समं नास्ति नास्ति राधासमा प्रिया।
नास्ति प्रेमवती राधा समा जगत्त्रयेऽपरा॥

(श्रीसिद्धेश्वर तन्त्र)

श्रीकृष्ण कहते हैं – तीनों लोकों में श्रीराधा-नाम के समान दूसरा कोई नाम नहीं। श्रीराधा के समान कोई दूसरी मेरी प्रिया नहीं तथा श्रीराधा के समान कोई प्रेम वाली नहीं अर्थात् श्रीराधिका के तुल्य और कोई है ही नहीं।

सहस्रनाम्नां पुण्यानां त्रिरावृत्या तु यत्फलम्।
एकावृत्या तु राधाया नामैकं तत्प्रयच्छति॥

(श्रीसिद्धेश्वर तंत्र)

भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि परम पवित्र विष्णु या कृष्ण सहस्र नामों की तीन बार आवृति करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल केवल एक बार श्रीराधा-नाम लेने से प्राप्त हो जाता है।

****

राधानामसुधायुक्तं कृष्णनामरसालयम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय व्याधिभिः स न बाध्यते॥

(श्रीरासोल्लास तंत्रान्तर्गत, युगलकिशोराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 2)

भगवान् शिव कहते हैं – श्रीराधा-नाम अमृत से युक्त है एवं श्रीकृष्ण-नाम रस-रूप है अर्थात् सम्पूर्ण रसों का सिन्धु है, जो प्रातःकाल उठकर 'श्रीराधा-कृष्ण' नाम को जपता है, वह कभी भी व्याधियों से बाधित नहीं होता अर्थात् सर्वव्याधियों से मुक्त हो जाता है।

येनोच्चैरुच्यते रागै राधाकृष्णपदद्वयम्।
वामदक्षिणतस्तस्य राधाकृष्णोऽनुधावति॥

(श्रीरासोल्लास तंत्रान्तर्गत, युगलकिशोराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 3)

जिसने उच्चस्वर तथा अनुराग (प्रेम) के साथ 'राधा-कृष्ण' इस दो पद का उच्चारण किया, उस मनुष्य के वामाङ्ग और दक्षिणाङ्ग में (दायें-बायें) श्रीराधा-कृष्ण उसके पीछे संग-संग चलते हैं।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो राधाकृष्णेति कीर्तनात्।
सुखेन प्रेम सम्पत्तिं लभते ह्याशु वैष्णवः॥

(श्रीरासोल्लास तंत्रान्तर्गत, युगलकिशोराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 5)

जो वैष्णव श्रीराधा-कृष्ण नाम का कीर्तन करता है। वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है और सुखपूर्वक प्रेम-संपत्ति (भगवत्प्रेम, युगल-प्रेम) को प्राप्त करता है।

राधाकृष्णमहामन्त्रं यो जपेद् भक्तिपूर्वकम्।
अन्तकाले भवेत्तस्य राधाकृष्णेति संस्मृतिः॥

(श्रीरासोल्लास तंत्रान्तर्गत, युगलकिशोराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 6)

भक्तिपूर्वक जो नित्य महामन्त्र स्वरूप श्रीराधा-कृष्ण नाम को जपता है, उसे अन्त काल में (मृत्यु के समय) श्रीराधा-कृष्ण का स्मरण होता है।

****

एतस्मिन्नन्तरे देवि राधा राधेति वीणया।
गीयमानो मुनिश्रेष्ठो नारदः समुपागतः॥

(श्रीवासुदेवरहस्यान्तर्गत, राधातन्त्रम् 17.50)

श्रीशिवजी पार्वतीजी से कहते हैं – इसके बाद देवर्षि नारद वीणा में 'राधा-राधा' इस प्रकार कीर्तन करते हुए (श्रीकृष्ण के दर्शनार्थ) द्वारिका में आये।

****

त्वया चाऽऽराध्यते यस्मादहं कुञ्जमहोत्सवे।
राधेति नाम विख्याता रासलीलाविधायिका॥

(श्रीकृष्णयामल तंत्र)

श्रीकृष्ण के श्रीराधारानी के प्रति वचन – हे रासलीलाविधायिका राधे! तुम्हारे द्वारा मैं रास-कुञ्ज-महोत्सव में आराधित किया गया हूँ, जिससे तुम्हारा नाम राधा विख्यात हुआ।

मम देहस्थितैः सर्वैर्देवैर्ब्रह्मपुरोगमैः।
आराधिता यतस्तस्माद् राधेति परिकीर्तिता॥

(श्रीकृष्णयामलतंत्र 14.45)

श्रीकृष्ण के वचन – हे राधे! मेरे देह में स्थित इन्द्र, ब्रह्मादि सभी देवताओं ने आपकी आराधना की, इसलिए तुम्हें राधा कहा गया है।

****

चक्रं चक्री शूलमादाय शूली पाशं पाशी वज्रमादाय वज्री।
धावन्त्यग्रे पृष्ठतः पार्श्वतश्च राधा राधा वादिनो रक्षणाय॥

(श्रीहरिलीलामृत तन्त्र)

भगवान् विष्णु सुदर्शन चक्र लेकर, श्रीशिवजी त्रिशूल लेकर, श्रीवरुणजी पाश लेकर और इन्द्र वज्र लेकर 'राधा-राधा' कहने वाले के आगे-पीछे इधर-उधर उसकी रक्षा के लिए दौड़ते हैं।

****

अनन्तासंख्ये श्रीहरिभगवतो नाम कथने
फलं यत्तत्कृष्णाभिधसुसकृदुक्तौ भवति वै।
तथैव श्रीकृष्णस्मरण करणं यच्चफलदं
तदाधिक्यं राधा युगल शुभवर्णं प्रगदितम्॥

(श्रीराधानाम विनोद काव्य)

भगवान् शंकर श्रीपार्वती जी से कहते हैं – भगवान् श्रीहरि के असंख्य (अनन्त) नाम कहने पर जो फल मिलता है, वह फल एक बार श्रीकृष्ण नामोच्चारण करने से प्राप्त होता है; वैसे ही अनन्त बार श्रीकृष्ण नाम लेने से जिस फल की प्राप्ति होती है, उससे भी विशेष फल एक बार कहा हुआ दो अक्षर वाला परम आह्लाद-आनंदस्वरूप 'श्रीराधा-नाम' देता है।

आचार्य-संत साहित्य में श्रीराधा-नाम महिमा

दुराराध्यमाराध्य कृष्णं वशे त्वं महाप्रेमपूरेण राधाभिधाऽभूः।
स्वयं नामकृत्या हरिप्रेम यच्छ प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम्॥

(श्रीनिम्बार्काचार्यजी विरचित-श्रीराधाष्टकम् 3)

श्रीराधे! जिनकी आराधना कठिन है, उन श्रीकृष्ण की भी आराधना करके तुमने अपने महान् प्रेमसिन्धु की बाढ़ से उन्हें वश में कर लिया। श्रीकृष्ण की आराधना के ही कारण आप 'राधा' नाम से विख्यात हुईं। श्रीकृष्णस्वरूपे! अपना यह नामकरण स्वयं तुमने किया है, इससे अपने सन्मुख आये हुए मुझ शरणागत को श्रीहरि का प्रेम प्रदान करो।

सदा राधिका-नाम जिह्वाग्रतः स्यात् सदा राधिका-रूपमक्ष्यग्र आस्ताम्।
श्रुतौ राधिका-कीर्तिरन्तः स्वभावे गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे॥

(श्रीनिम्बार्काचार्यजी विरचित-श्रीराधाष्टकम् 8)

मेरी जिह्वा के अग्रभाग पर श्रीराधा का ही नाम विराजमान रहे अर्थात् जिह्वा से हर समय मैं 'राधा-राधा' बोलूँ, मेरे नेत्रों के समक्ष सदा श्रीराधा का ही रूप प्रकाशित हो। मेरे कानों को श्रीराधारानी की कीर्ति (कथा) सुनाई दे और अन्तःकरण में सहज श्रीराधिका के ही भाव-गुण आदि का स्फुरण हो, यही मेरी कामना है।

****

रहस्यं श्रीराधेत्यखिल निगमानामिव धनं
निगूढं मद्वाणी जपतु सततं जातु न परम्।
प्रदोषे दृङ्मोषे पुलिनगमनायाति मधुरं
चलत्तस्याश्चञ्चच्चरणयुगमास्तां मनसि मे॥

(श्रीविट्ठलनाथगोस्वामीजी विरचित-श्रीस्वामिन्याष्टकम्)

'श्रीराधा'–यह नाम समस्त वेदों का मानों छिपा हुआ धन है। मेरी वाणी इस 'राधा' नामक मन्त्र को चुपचाप जपती रहे, किसी दूसरे मन्त्र का जाप न करे। जब प्रदोष में अन्धकार दृष्टि को चुरा लेता है, तब यमुना के पुलिन की ओर जाने के लिए उद्यत श्रीराधा के चरण-युगल मेरे मानस में निवास करें।

****

राधेति नाम नवसुन्दर-सीधुमुग्धं,
कृष्णेति नाम मधुराद्भुतगाढ़ दुग्धम्।
सर्वक्षणं सुरभिराग-हिमेन रम्यं,
कृत्वा तदेव पिव मे रसने क्षुधार्ते॥

(श्रीरघुनाथदासगोस्वामिजी विरचित–अभीष्टसूचन स्तव)

'राधा'–यह नाम अभिनव सुन्दर अमृत की तरह मधुर है; 'कृष्ण' नाम अद्भुत गाढ़े दूध की तरह अत्यन्त स्वादिष्ट है, 'हे मेरी क्षुधार्त रसने! इन दोनों को मिलाकर तुम सुगन्धी अनुरागरूपी बर्फ से इसे रमणीय बनाकर सतत् 'राधा-कृष्ण' नाम का पान करती रहो।

****

राधैवेष्टं सम्प्रदायैककर्ताऽऽचार्यो राधा मन्त्रदः सद्गुरुश्च।
मन्त्रो राधा यस्य सर्वात्मनैवं वन्दे राधा-पादपद्म-प्रधानम्॥

(श्रीहरिलालव्यासजी)

श्रीराधा ही जिनकी इष्ट हैं, श्रीराधा ही जिनके सम्प्रदाय की एकमात्र प्रवर्तक आचार्य हैं, जिनकी मन्त्रदाता सद्गुरु श्रीराधा ही हैं, जिनका मन्त्र भी श्रीराधा ही हैं, श्रीराधा चरण-कमल-प्रधान उन श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी की मैं वन्दना करता हूँ।

यन्नामस्मरणात् श्वपाकोपि भवेद्विजः।
विश्वोद्धारकरी सद्यौ नामस्मरणमात्रतः॥

(श्रीवंशीअलिजी विरचित–श्रीराधासिद्धांत)

श्रीराधा-नाम का स्मरण करने से श्वपच भी द्विज हो जाता है और राधा-नाम के स्मरण मात्र से तत्क्षण समस्त जीवों का कल्याण करने वाला हो जाता है।

****

यज्जापः सकृदेव गोकुलपतेराकर्षकस्तत्क्षणा-
द्यत्र प्रेमवतां समस्तपुरुषार्थेषु स्फुरेत्तुच्छता।
यन्नामाङ्कितमन्त्रजापनपरः प्रीत्या स्वयं माधवः
श्रीकृष्णोऽपि तदद्भुतं स्फुरतु मे राधेति वर्णद्वयम्॥

(श्रीमद्राधासुधानिधि 94)

जिस (राधा-नाम) का एक बार जप (उच्चारण) ही गोकुलपति नंदनंदन श्रीकृष्ण को तत्काल आकर्षित कर लेता है, जिस (राधा-नाम) में प्रीतिसंपन्न होने पर समस्त धर्म, अर्थ, काम, मोक्षादि पुरुषार्थों में तुच्छता बुद्धि हो जाती है, जिस (राधा) नाम से अंकित मन्त्र को स्वयं माधव भी तत्परता से प्रीतिपूर्वक जपते हैं, वही 'रा-धा' ये अद्भुत दो अक्षर मेरी जिह्वा पर व हृदय में सतत् स्फुरित हों।

कालिन्दीतटकुञ्जमन्दिरगतो योगीन्द्रवद्यत्पद-
ज्योतिर्ध्यानपरः सदा जपति यां प्रेमाश्रुपूर्णो हरिः।
केनाप्यद्भुतमुल्लसद्रतिरसानन्देन सम्मोहितः
सा राधेति सदा हृदि स्फुरतु मे विद्या परा द्व्यक्षरा॥

(श्रीमद्राधासुधानिधि 95)

श्रीकालिन्दी (यमुनाजी) के तटवर्ती कुंजभवन में विराजमान श्रीहरि योगिराज की भाँति जिन (श्रीराधा) के चरणों की ज्योति के ध्यान में निमग्न

हुए, प्रेमाश्रुओं से पूर्ण नेत्र वाले होकर निरन्तर जिस (राधा-नाम) का जप करते हैं और किसी अद्भुत रूप में उल्लसित होते हुए रति-रस (प्रेमरस) के आनन्द से अत्यन्त मोहित हुए रहते हैं–वह 'रा-धा' यह दो अक्षर वाली परा (वेदातीत) विद्या मेरे हृदय में नित्य स्फुरित हो।

रसकुल्या टीका – कृष्णेतिद्व्यक्षरीत्वेऽपि तद्ध्येयत्वादियं परा विद्या सा का यां हरिः सदा जपति। (श्रीहरिलालव्यासजी)

'यद्यपि 'कृष्ण' यह भी दो अक्षरों वाली विद्या है तो भी श्रीकृष्ण की भी ध्येय होने से 'राधा' नामक द्व्यक्षरा विद्या उससे परा है। वह विद्या कौन-सी है? जिसको श्रीहरि सदा जपते हैं।'

देवानामथ भक्तमुक्तसुहृदामत्यन्तदूरं च यत्
प्रेमानन्दरसं महासुखकरं चोच्चारितं प्रेमतः।
प्रेम्णाकर्णयते जपत्यथमुदा गायत्यथालिष्वयं
जल्पत्यश्रुमुखो हरिस्तदमृतं राधेति मे जीवनम्॥

(श्रीमद्राधासुधानिधि 96)

देवताओं, भक्तों, मुक्त पुरुषों और मित्रों से जो (राधा-नाम) अत्यन्त दूर है अर्थात् अप्राप्य है, जो (राधा-नाम) प्रेमानन्द रस रूप है तथा प्रेम से उच्चारण करने पर जो महासुख को देने वाला है। जिस (राधा-नाम) को अश्रुओं से भीगे हुए मुख वाले श्रीहरि प्रेम से सुनते हैं, जपते हैं तथा सखीजनों के मध्य आनंद से गाते हैं–वह अमृत स्वरूप 'राधा' यह नाम ही मेरा जीवन है।

राधानामसुधारसं रसयितुं जिह्वास्तु मे विह्वला
पादौ तत्पदकाङ्कितासु चरतां वृन्दाटवीवीथिषु।
तत्कर्मैव करः करोतु हृदयं तस्याः पदं ध्यायता
त्तद्भावोत्सवतः परं भवतु मे तत्प्राणनाथे रतिः॥

(श्रीमद्राधासुधानिधि 141)

मेरी रसना राधा-नामामृत को पीने के लिए व्याकुल बनी रहे। मेरे पैर उनके (श्रीराधा के) चरण कमलों से चिह्नित श्रीवृन्दावन की गलियों में विचरण करते रहें, मेरे हाथ उन्हीं की सेवा से सम्बंधित कार्य करें, हृदय उन्हीं के चरणों का ध्यान करे और उनके (श्रीराधिका के) प्रति (मेरे मन में रहे हुए) उत्साहपूर्ण भाव के कारण उनके प्राणनाथ (श्रीकृष्ण) में मेरी प्रीति हो।

राधानामैव कार्य्यं ह्यनुदिनमिलितं साधनाधीशकोटि-
स्त्याज्यो नीराज्य राधापदकमलसुधां सत्पुमर्थाग्रकोटिः।

(श्रीमद्राधासुधानिधि 143)

यह निश्चित है कि यदि श्रीराधा-नाम ही अनुदिन श्रवण करने या कीर्त्तन करने को मिल जाय तो कोटि-कोटि साधन भी परित्याज्य हो जाते हैं और श्रीराधा-पद-कमल-सुधा पर कोटि-कोटि श्रेष्ठ मोक्षादि पुरुषार्थ न्यौछावर हैं।

अनुल्लिख्यानन्तानपि सदपराधान्मधुपति-
र्महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति।
तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसं
महिम्नः कः सीमां स्पृशति तव दास्यैकमनसाम्॥

(श्रीमद्राधासुधानिधि 154)

हे श्रीराधे, मधुपति श्रीकृष्ण आपके महाप्रेम में आविष्ट होकर इस लोक में केवल आपके ही नाम (राधा-नाम) रूपी अमृत रस को ग्रहण करने वाले व्यक्ति के अनन्त (सत्पुरुषों के प्रति किये गये) अपराधों का भी लेखा-जोखा नहीं रखते अर्थात् अनन्त अपराधों की भी उपेक्षा करके (और) इस विचार में पड़ जाते हैं कि इसको (राधा-नाम जापक को) क्या दिया जाय? (फिर) आपके एकमात्र दास्य में अनुरक्त चित्त वाले की (अनन्यभाव से आपकी दासी होने में जिसका मन संलग्न है उसकी) महिमा-सीमा को कौन स्पर्श कर सकता है?

रसकुल्या टीका – तदानन्दोद्दीपनेन तस्य अनन्तानपि 'सतां निन्दा' इत्यादि दशभक्तापराधादीन्, स्वापराधादपि तेषामपरिहार्यत्व-महिम्नोऽप्यनुल्लिख्य, प्रेम्णा स्वोक्तिनियमपरिहृतिपूर्वकमगणय्य, परमं सर्वेभ्योऽपि मुक्त्यादिभ्यः किमु भक्तिफलेभ्योऽपि श्रेष्ठं, देयं वस्तुपदार्थं विमृशति विचारयति, अहो ! किमस्मै लोकोत्तरं दद्याम्। (श्रीहरिलालव्यासजी)

'श्रीराधा-नाम का श्रवण करते ही श्रीकृष्ण के हृदय में जो आनंद उमड़ता है, उसमें वे भक्तों के 'सज्जन-निन्दा' आदि जो दस अपराध बताये गये हैं उनकी (अनन्त संख्या को भी ध्यान में नहीं लाते)। भक्तों के दस अपराध इतने गंभीर हैं कि वे श्रीकृष्ण के अपने अपराधों से भी अधिक अक्षम्य हैं। ऐसे अपराधों को भी कोई महत्त्व न देकर अर्थात् राधा नाम के प्रेम के कारण अपने ही द्वारा विहित नियमों को भंग कर, सर्वश्रेष्ठ मुक्ति आदि पुरुषार्थ तो क्या बल्कि भक्ति-फल से भी श्रेष्ठ दिये जाने योग्य पदार्थ के सम्बन्ध में विचारते हैं कि अहो ! इसे (राधा-नाम लेने वाले को) क्या लोकोत्तर वस्तु दूँ।'

क्काहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्ह्यकर्मा
यत्तन्नाम स्फुरति महिमा एष वृन्दावनस्य॥

(श्रीमद्राधासुधानिधि 260)

कहाँ मैं तुच्छ, परम अधम और निन्दनीय काम करने वाला साधारण जीव! आश्चर्य है कि फिर भी उनका (श्रीराधा का) नाम मेरे हृदय में प्रकाशित होता है, यह श्रीवृन्दावन की ही महिमा है।

रसकुल्या टीका – राधे-राधे, इति तु तत्रत्यानां सर्वेषामनवरतं सार्वदिको विश्रुत एव मन्त्रः श्रूयते। (श्रीहरिलालव्यासजी)

'राधे-राधे' यह तो सभी वृन्दावनवासियों का निरन्तर चलते रहने वाला मन्त्र सदा के लिये विख्यात ही सुना जाता है।'

अपि सर्वधर्महीनः सर्वकुकर्मावलेश्च निर्माता।
राधेति सिद्धमन्त्रं द्व्यक्षरमुच्चार्य किं न सिध्येयम्॥

(वृन्दावन महिमामृत 9.13)

सर्व धर्महीन होकर भी, सब कुकर्म करते हुए भी, 'राधा' इन दो अक्षरों का सिद्ध-मन्त्र उच्चारण करके क्या तू सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकता?

माऽस्तु मम कदापि पापरूपिणो नरकादुद्धारः किन्तु।
श्रीवृन्दावन-राधा-तन्नागरनाम-विस्मृतिं नैतु॥

(वृन्दावन महिमामृत 9.80)

मुझ पापी का भले कभी भी नरक से उद्धार न हो, किन्तु श्रीवृन्दावन-नाम, श्रीराधा-नाम तथा श्रीराधानागर के नाम को मैं कभी न भूलूँ।

अहह विगर्हित-कर्म्मण आस्तां यत्तन्ममातिमूढ़स्य।
नैव जहाति तु वृन्दाविपिनं नैवात्र नाम राधायाः॥

(वृन्दावन महिमामृत 9.86)

अहा! मैं दुष्टकर्मकारी अति मूर्ख हूँ, मेरी कुछ भी गति क्यों न हो, किन्तु मैं श्रीवृन्दावन को नहीं छोड़ूँगा और न ही यहाँ श्रीराधा-नाम को छोड़ूँगा।

दुश्चेष्टानां दुर्मतीनाञ्च कोटिःकोटिर्घोरानर्थदुर्वासनानाम्।
कामं वृन्दाकानने मेऽस्तु मास्तु श्रीराधाया विस्मृतं नाममात्रम्॥

(वृन्दावन महिमामृत 10.48)

इस श्रीवृन्दावन में मुझसे कोटि-कोटि दुश्चेष्टाएं हों या कुमति उदय हों या घोर अनर्थ तथा दुर्वासनाएं उदित हों, एकमात्र श्रीराधा-नाम मुझे कदापि विस्मृत न हो।

कस्यापि गोपरमणीय रमणीय मूर्त्तेः कादम्बिनीरुचि कदम्ब करम्बितस्य।
विद्युत् पिशंग वसनस्य निशम्य राधा कनामादिमक्षरमपि क्षरदास्यमीक्षे॥

(वृन्दावन महिमामृत 16.3)

जो गोप रमणियों के लिए रमणीय-मूर्ति मेघमाला की भाँति कांतियुक्त हैं एवं बिजली की भाँति पीताम्बरधारी हैं एवं राधा-नाम के अक्षर मात्र को सुनते ही जिनके मुखचंद्र से अश्रु आदि क्षरण होने लगते हैं, मैं उनके (श्रीकृष्ण के) मुखचन्द्र के दर्शन करने की इच्छा करता हूँ।

****

पौर्णमासी–मयापि मोदकवृन्ददानापदेशाद् वृन्दाटवीमध्यमासाद्य-
राधेति मङ्गलाक्षरमाधुर्येण माधवकर्णयोर्द्वन्द्वमानन्दनीयम्।

(श्रीरूपगोस्वामीजी विरचित-श्रीविदग्धमाधव नाटक 1.59)

पौर्णमासी जी कहती हैं – मैं लड्डू बाँटने के बहाने वृन्दावन जाती हूँ और वहाँ जाकर 'राधा'–इन दो मंगलमय अक्षरों के माधुर्य से कृष्ण के कानों को आनन्दित करूँगी।

त्वद्वार्तोत्तर गीतगुम्फितमुखो वेणुः समन्तादभू-
त्त्वद्वेशोचित शिल्पकल्पनमयी सर्वा बभूव क्रिया।
त्वन्नामानि बभूवुरस्य सुरभीवृन्दानि वृन्दाटवी
राधे त्वन्मयवल्लिमण्डलघना जाताद्य कंसद्विषः॥

(श्रीरूपगोस्वामीजी विरचित-श्रीविदग्धमाधव नाटक 3.18)

ललिता – हे राधे! श्रीकृष्ण की वंशी सदा तुम्हारे ही चरित्र का गान करती रहती है, वे तुम्हारी वेश-रचना के योग्य ही समस्त शिल्प क्रिया करते रहते हैं, समस्त गौएँ तुम्हारे नाम की हो रही हैं अर्थात् गौओं को बुलाते समय वे 'राधे-राधे' ही उच्चारण करते हैं। हे सुंदरि! श्रीकृष्ण के लिए लता समूह

मण्डल यह श्रीवृन्दावन इस समय राधामय ही हो रहा है–सर्वत्र उन्हें तुम्हारा ही स्वरूप स्फुरित होता है।

राधा पुरः स्फुरति पश्चिमतश्च राधा
राधाधिसव्यमिह दक्षिणतश्च राधा।
राधा खलु क्षितितले गगने च राधा
राधामयी मम बभूव कुतस्त्रिलोकी॥

(श्रीरूपगोस्वामीजी विरचित-श्रीविदग्धमाधव नाटक 5.18)

श्रीकृष्ण – (उत्सुकता पूर्वक) मेरे आगे राधा हैं, मेरे पीछे राधा हैं, मेरे दाहिनी ओर राधा और बायीं ओर राधा, पृथ्वी पर भी राधा और आकाश में राधा ही मुझे दीखती हैं। अहो! मेरे लिए राधामय ही यह त्रिलोकी क्यों हो गई?

****

श्रीवृन्दाविपिनेश्वरीं स्वमनसि स्मृत्वा व्रजेन्द्रात्मजो
राधेत्यक्षरयोर्युग जपति यत्कुञ्जे सुरोमाञ्चितः।
तत्रागत्य ततः प्रिया प्रकुरुषे किं मन्त्रमित्थं गिरा
नर्म्माण्यातनुते मुदा सरसिकां पश्यामि तां कर्ह्यहम्॥

(श्रीगोवर्द्धनभट्टजी विरचित–श्रीराधाकुण्डस्तव 74)

जिसके कुंज में बैठकर श्रीव्रजराजनंदन श्रीकृष्ण अपने मन में वृन्दावनेश्वरी श्रीराधारानी का स्मरण कर रोमांचित होकर 'राधा'–इन दो अक्षरों का जाप करते हैं तथा उस समय राधिका वहाँ आकर 'आप क्या कर रहे हैं? किस मन्त्र का जप कर रहे हैं?' इस प्रकार पूछती हुई नर्म्म विस्तार करती हैं, उस रसमय 'राधाकुण्ड' को मैं कब देखूँगा।

राधा साध्यं साधनं यस्य राधा, मन्त्रो राधा मन्त्रदात्री च राधा।
सर्वं राधा जीवनं यस्य राधा, राधा राधा वाचि किं तस्य शेषम्॥

(श्रीवागीशशास्त्री कृत–श्रीराधानामसुधा 20)

जिस अधिकारी जीव का राधा ही साधन और साध्य है। मन्त्र भी राधा है और मन्त्र देने वाली गुरुरूपा भी राधा है। राधा ही जिसका सर्वस्व तथा जीवन-प्राण है। वाणी से भी जो निरन्तर 'राधा-राधा' रटता है, उसके लिए कोई भी पुरुषार्थ शेष नहीं रहता अर्थात् उसने तो सब कुछ पा लिया है।

राधाकीर्तिं कीर्त्तयन् पादरेणुं श्रीराधायाः संस्पृशन् सर्वगात्रैः।
राधारण्ये पर्यटन् व्याहरञ्च श्रीराधे राधे कालमेतं नयेयम्॥

(श्रीवागीशशास्त्रीजी विरचित–श्रीराधासप्तशती 5.50)

श्रीराधा की कीर्ति-कथा का कीर्तन, अपने सम्पूर्ण अंगों द्वारा श्रीराधा की चरण-रेणु का स्पर्श, श्रीराधा के विहार-विपिन श्रीवृन्दावन में पर्यटन तथा 'श्रीराधे! राधे!' नाम का उच्चारण करता हुआ, इस जीवन काल को व्यतीत करूँ (यही मेरे जीवन की सबसे बड़ी साधना है)।

एतामुपासते सर्वे तृणगुल्मलतादयः।
पलाशार्ककरीलाद्या राधे राधे रटन्ति ताम्।
क्षुद्रश्चराचरा जीवाः सखे किमुत मानवाः॥

(श्रीवागीशशास्त्रीजी विरचित–श्रीराधासप्तशती 6.67)

वृन्दावन के तृण, गुल्म और लता आदि सभी इनकी (श्रीराधारानी की) उपासना करते हैं। सखे! श्रीवृन्दावन में क्षुद्र चराचर जीव तथा आक, ढाक और करील आदि भी 'राधे! राधे!' कहकर उनकी रट लगाये रहते हैं, फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या।

राधेति नाम जप भो रसने ममाङ्ग-
राधावने वस तदंघ्रिरजोऽभिलिप्तम्।

(श्रीवागीशशास्त्रीजी विरचित–श्रीराधासप्तशती 7.67)

हे रसने! तू 'राधा' इस सरस मधुर नाम का जप करती रह तथा हे देह! तू श्रीराधा की परम पावन चरणरज से लिप्त होकर इस श्रीराधावन (श्रीवृन्दावन) में सदा वास किया कर।

राधा नामास्ति जिह्वाग्रे, किं सुसाधनकोटिभिः।
राधा-रस-सुधा-स्वादो, यदि किं साध्यकोटिभिः॥

(श्रीवागीशशास्त्रीजी विरचित–श्रीराधासप्तशती 7.91)

जिसकी जिह्वा पर श्रीराधा-नाम आ गया, उसे किसी भी सुन्दर से सुन्दर साधन की आवश्यकता नहीं रहती; और यदि किसी को श्रीराधा-रस-सुधा का आस्वादन मिल गया तो उसके लिये दूसरे कोटि-कोटि साध्यों की भी क्या आवश्यकता है अर्थात् उसके लिए वे सब उत्तमोत्तम साध्य निरर्थक हो जाते हैं।

****

उपास्येर मध्ये कोन् उपास्य प्रधान?
श्रेष्ठ-उपास्य–युगल 'राधाकृष्ण' नाम।

(श्रीचैतन्यचरितामृत, मध्यलीला 8.255)

श्रीचैतन्य महाप्रभु जी ने श्रीरायरामानन्द जी से पूछा – समस्त उपास्यों के मध्य में कौन उपास्य सर्वप्रधान है?

श्रीरायरामानन्द जी ने उत्तर देते हुए कहा – श्रीराधा-कृष्ण युगल नाम ही सर्वश्रेष्ठ उपास्य है।

श्रीराधा-नाम क्यों पड़ा?

स एवायं पुरुषः स्वयमेव समाराधनतत्परोऽभूत तस्मात्
स्वयमेवसमाराधनमकरोत् अतो लोके वेदे श्रीराधा गीयते॥

(सामरहस्योपनिषद्)

'वही परम पुरुष स्वयं ही अपने-आपकी आराधना करने के लिये तत्पर हुआ। आराधना की इच्छा होने के कारण उस पुरुष ने अपने आप ही अपने-आपकी आराधना की। इसीलिये लोक एवं वेद में श्रीराधा नाम से उसकी प्रसिद्धी हुई।'

अर्थात् सबका आदि कारण परम पुरुष एक ही है और वह हैं–भगवान् श्रीकृष्ण; **'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्'**, यह अनादि परमपुरुष माधव ही राधा-माधव रूप से दो स्वरूपों में प्रकट होकर स्वयं आराधक बनकर अपने ही रमणी रूप का समाराधन करने लगे। वेदवेत्ताओं ने उसी आनन्दमय रमणी स्वरूप को श्रीराधा कहा है; अर्थात् श्रीकृष्ण ने आराधना करने की इच्छा से स्वयं अपने आपको दो रूपों (नायक-नायिका) में विभक्त कर लिया और श्रीकृष्ण रूप से अपने ही रमणी रूप की आराधना की; आराधना करने के कारण नायिका रूप का नाम श्रीराधा हुआ। इसीलिये शास्त्रों में श्रीराधा-कृष्ण को अभिन्न, एक प्राण दो देह कहा गया है; क्योंकि उनमें कोई भेद नहीं, वे एक ही हैं। श्रीकृष्ण के हृदय के गुप्त प्रेम का नाम ही श्रीराधा है।

****

कृष्णप्राणाधिका देवी तदधीनो विभुर्यतः।
रासेश्वरी तस्य नित्यं तया हीनो न तिष्ठति॥
राध्नोति सकलान् कामांस्तस्माद् राधेति कीर्तिता।

(श्रीदेवीभागवत 9.50.17-18)

श्रीराधा श्रीकृष्ण की प्राणाधिका देवी हैं। कारण, भगवान् इनके अधीन रहते हैं। ये नित्य रासेश्वरी भगवान् के रास की नित्य स्वामिनी हैं। इनके बिना भगवान् श्रीकृष्ण रह ही नहीं सकते। ये (श्रीकृष्ण की भी) सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करती हैं, इसी से ये 'राधा' नाम से कही जाती हैं।

****

रासे सम्भूय गोलोके सा दधाव हरेः पुरः।
तेन राधा समाख्याता पुराविद्भिर्द्विजोत्तम॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण ब्रह्मखण्ड 5.26)

'राधा' नाम इसलिये हुआ कि गोलोक धाम में 'रास-मण्डल' में श्रीहरि के वाम भाग से प्रकट हुईं तथा प्रकट होते ही पुष्पचयन कर श्रीकृष्णचन्द्र के चरणों में अर्घ्य समर्पित करने के लिये 'धावित' हुईं।

****

कृष्णेन आराध्यत इति राधा, कृष्णं समाराधयति सदेति राधिका॥

(राधिकोपनिषद्)

श्रीकृष्ण इनकी नित्य आराधना करते हैं, इसलिये इनका नाम राधा है और श्रीकृष्ण की ये सदा सम्यक् रूप से आराधना करती हैं, इसलिये राधिका कहलाती हैं।

****

त्वया चाऽऽराध्यते यस्मादहं कुञ्जमहोत्सवे।
राधेति नाम विख्याता रासलीलाविधायिका॥

(श्रीकृष्णयामल तंत्र)

श्रीकृष्ण के श्रीराधारानी के प्रति वचन – हे रासलीलाविधायिका राधे! तुम्हारे द्वारा मैं रास-कुञ्ज-महोत्सव में आराधित किया गया हूँ, जिससे तुम्हारा नाम राधा विख्यात हुआ।

'हरे कृष्ण' महामंत्र में भी श्रीराधा-नाम

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

इस सोलह नामों वाले महामंत्र में मुख्य रूप से 'हरे, कृष्ण और राम' तीन नामों की आवृति हुई है; जिसका सामान्य अर्थ है–'हरे' शब्द से भगवान् श्रीहरि, 'कृष्ण' शब्द से भगवान् श्रीकृष्ण एवं 'राम' शब्द से भगवान् श्रीराम। किन्तु युगलकिशोर श्रीराधा-माधव के भजननिष्ठ रसिक महापुरुषों ने इस महामंत्र को युगलमन्त्र 'राधे-कृष्ण' के ही रूप में ग्रहण किया है।

श्रीजीवगोस्वामी प्रभृति आचार्यों के मतानुसार 'हरे' शब्द 'हरा' शब्द का सम्बोधन है और 'हरा' कहते हैं श्रीराधा को –

सर्वचेतोहरः कृष्णस्तस्यचित्तं हरत्यसौ।
वैदग्धीसारविस्तारैरतो राधा हरा मता॥

'जो श्रीकृष्ण सर्वचेतोहर हैं अर्थात् समस्त चराचर जगत् के चित्त को हरने वाले हैं, उन श्रीकृष्ण के भी चित्त को जो अपने लोकोत्तर सौन्दर्य-माधुर्य और प्रेम द्वारा हरण करती हैं, वे राधा ही 'हरा' कहलाती हैं।'

'हरा' नाम होने के और भी अनेकों कारण हैं, कतिपय यहाँ उद्धृत हैं– श्रीकृष्ण के द्वारा हरण होने से, श्रीकृष्ण को हरि-हरि पुकारने से, श्रीजी द्वारा मुरलिका का हरण होने से, भृत्यों का कष्ट हरण करने से एवं श्रीकृष्ण के धैर्य का हरण करने से भी राधा को 'हरा' कहते हैं। 'हरा' का सम्बोधन ही हरे है।

फिर 'राम' शब्द का तात्पर्य यहाँ दशरथनंदन भगवान् श्रीराम से नहीं है अपितु 'रामु क्रीड़ायाम्' धातु से 'राम' शब्द निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है रमण करना; अतः हरा (श्रीराधा) के जो रमण हैं–वे राधारमण श्रीकृष्ण ही 'राम' हैं। अतएव महामंत्र के रूप में भी 'राधा-कृष्ण' नाम ही विद्यमान है।

श्रीमद्भागवत में श्रीराधा-नाम स्पष्ट रूप से क्यों नहीं?

प्रथम दृष्ट्या श्रीशुकदेव जी ने श्रीराधा-नाम का श्रीमद्भागवत में इसलिए स्पष्ट वर्णन नहीं किया क्योंकि उन्हें श्रीराधा-नामोच्चारणमात्र से भावोद्रेक के कारण छः महीने की मूर्च्छा आ जाती थी अर्थात् प्रेम समाधि लग जाती थी, इसीलिये उन्होंने श्रीमद्भागवत में स्पष्ट राधा-नाम का उच्चारण नहीं किया; क्योंकि राधा-नाम लेते ही श्रीशुकदेव जी के मूर्च्छित हो जाने पर भागवत कथा में विराम आ जाता, इससे श्रृंगी ऋषि के श्राप के कारण सात दिन में मृत्यु की ओर उन्मुख श्रीपरीक्षितजी का महान् अहित हो जाता।

श्रीराधानाममात्रेण मूर्च्छा षाण्मासिकी भवेत्।
नोच्चारितमतः स्पष्टं परीक्षिद्धितकृन्मुनिः॥

दूसरा कारण श्रीराधा-नाम रूपी परम धन को श्रीशुकमुनि गुप्त रखना चाहते थे। यद्यपि वे श्रीराधा-नाम का आस्वादन अपने अंतर्हृदय में निरन्तर करते रहते थे, किन्तु **'राधाभिधे मम मनोऽखिलसारसारे'** समस्त सारों का सार अत्यन्त मूल्यवान् सार पदार्थ समझकर वे उसे (राधा नाम को) बाहर प्रकट करना नहीं चाहते थे; यह गोपनीय रहस्य परम रसिकाचार्य विशाखा सखी के अवतार श्रीहरिरामव्यास जी ने अपनी वाणी में स्पष्ट वर्णित किया है–

परम धन राधा नाम अधार।
जाहि स्याम मुरली में टेरत, सुमरत बारंबार॥
जंत्र मंत्र और वेद तंत्र में, सभी तार को तार।
श्रीशुक प्रगट कियौ नहिं यातें, जानि सार कौ सार॥

(श्रीव्यासवाणीजी)

रसिक महापुरुषों ने लिखा है कि श्रीशुकदेव जी राधा-नाम के बहुत बड़े रसिक हैं क्योंकि श्रीराधारानी ही उनकी इष्ट, परम गुरु हैं। इसलिए उन्होंने श्रीमद्भागवत की कथारम्भ में मंगलाचरण करते हुए सर्वप्रथम **'नमो नमस्तेऽस्वृषभाय सात्वतां'** (भा. 2.4.17) इस श्लोक में गूढ़ रूप से श्रीराधारानी की ही महिमा का गान किया है।

जै-जै श्रीशुकदेव, उपासक श्याम के।
अति अनन्य रिझवार, राधिका नाम के॥
श्रीराधा आराध्य, गूढ़ दरसाइयो।
प्रथम मंगलाचरण. माँझ जस गाइयो॥
गाइ जस निरधार कीनी, नित्यता श्रीधाम की।
जहाँ रास विलास लीला, लखि गई सुधि काम की॥
रस विचित्र चरित्र माँहिं, पक्ष बोलत बाम के।
जै-जै श्रीशुकदेव, उपासक श्याम के॥

(श्रीवंशीअलि जी के शिष्य श्रीअलिकिशोरीजी कृत, श्रीशुकाचार्य स्तुति मंगल)

श्रीसनातन गोस्वामी जी तो कहते हैं कि श्रीराधा-नाम तो क्या श्रीशुकदेव जी ने श्रीमद्भागवत में किसी भी गोपी का नाम नहीं लिया है, केवल संकेत मात्र में ही गोपीप्रेम की महिमा का वर्णन किया है –

अहो कृष्णरसाविष्टः सदा नामानि कीर्त्तयेत्।
कृष्णस्य तत्प्रियाणाञ्च भैष्म्यादीनां गुरुर्मम॥
गोपीनां विततोद्भुतस्फुटतर-प्रेमानलार्चिश्छटा-
दग्धानां किल नामकीर्त्तनकृतात्तासां विशेषात् स्मृतेः।
तत्तीक्ष्णज्वलनोच्छिखाग्रकणिकास्पर्शेन सद्यो महा-
वैकल्यं स भजन् कदापि न मुखे नामानि कर्त्तुं प्रभुः॥

(श्रीबृहद्भागवतामृतम् 1.7.157-158)

श्रीपरीक्षितजी अपनी माता उत्तरा से कह रहे हैं – अहो! मेरे श्रीगुरुदेव (श्रीशुकदेवजी) कृष्णरस में आविष्ट होकर श्रीकृष्ण और उनकी प्रिया श्रीरुक्मिणी आदि के नामों का सदा कीर्त्तन करते हैं किन्तु वे कभी भी श्रीराधा नाम एवं व्रजगोपियों के नाम का मुख से उच्चारण नहीं कर पाते।

इसका कारण है कि गोपियाँ अत्यधिक विस्तृत सर्वविलक्षण तथा चरमसीमा को प्राप्त प्रेम-रूपी अग्नि की शिखा के ताप से निरन्तर दग्ध रहती हैं, अतः श्रीराधारानी एवं व्रजगोपियों के नामों का संकीर्त्तन करने से उनका विशेष स्मरण होता है, जिसके फलस्वरूप उन गोपियों के हृदय में स्थित तीक्ष्ण प्रेमाग्नि से उठी हुई शिखा की एक चिनगारी के स्पर्श मात्र से भी वे (श्रीशुकदेवजी महाराज) उसी क्षण व्याकुल हो जाते हैं, इसलिए वे गोपियों एवं श्रीराधारानी का नामकीर्त्तन करने में समर्थ नहीं हो पाते हैं।

दिग्दर्शिनी टीका – अस्तु तावत्तासां माहात्म्यं कीर्त्तनीयमिति, नामापि विशेषेण ग्रहीतुमशक्यम्। निजजीवनैककारण-श्रीभगवत्कीर्त्तनादि विच्छेदकप्रेमवैवश्य-विशेष-शङ्कयेत्याशयेनाह–अहो इति द्वाभ्याम् । कृष्णस्य नामानि, तस्य प्रियाणां रुक्मिण्यादीनामपि नामानि मम गुरुः श्रीबादरायणिः सदा कीत्तयेत्।

गोपीनान्तु नामानि श्रीराधाचन्द्रावलीत्यादीनि कदापि मुखे कर्त्तुमुच्चारयितुमपि न प्रभुः न समर्थो भवति। तत्र हेतुः–विततो विस्तृतः परममहत्ताचरमकाष्ठाप्राप्त इत्यर्थः।

योऽद्भुतः सर्वविलक्षणः स्फुटरतरमप्रकटः प्रेमा, स एवानलः परमप्रकाशत्व- दाहकत्वादिस्वभावात्, तस्यार्चिः छटा ज्वालाप्रसारस्तया दग्धानां तासां गोपीनां नाम-संकीर्त्तनेन संज्ञाविशेषनिर्देशेन कृतात्, तासामेव स्मृतेः स्मरणस्य विशेषाधिक्यात् विशिष्टरूपेण स्मरणाद्वा हेतोर्यस्तासां सम्बन्धिन्यास्तीक्ष्णज्वलनोच्यशिखाग्रकणिकायाः स्पर्शस्तेन सद्यस्तन्नाम-

कीर्त्तनसमये तत्स्मरणसमय एव वा महावैकल्यं परमविह्वलतां भजन प्राप्नुवन्निति।

श्रीपरीक्षितजी कह रहे हैं – गोपियों के माहात्म्य का कीर्त्तन करने की बात तो दूर रही, मेरे गुरुदेव श्रीशुकदेव जी महाराज उनके नामों को ग्रहण करने में भी असमर्थ रहते थे।

गोपियों का नामकीर्त्तन करने से श्रीशुकदेवजी को उनका स्मरण हो आता, जिसके फलस्वरूप उनमें परम प्रेमविवशता के उदय होने से मेरे एकमात्र जीवनस्वरूप श्रीभगवद्-कीर्त्तन (श्रीमद्भागवत-कथा) आदि में विघ्न उत्पन्न होने की आशंका थी।

अतएव 'अहो' इत्यादि दो श्लोकों में बता रहे हैं कि मेरे गुरुदेव श्रीबादरायणि (श्रीशुकदेवजी) श्रीकृष्ण और उनकी प्रिया श्रीरुक्मिणी आदि के नामों का ही सदैव कीर्त्तन करते थे। परन्तु मेरे प्रभु श्रीराधा-नाम एवं चन्द्रावली आदि गोपियों के नाम को कभी भी मुख से उच्चारण करने में समर्थ नहीं होते थे।

इसका कारण है–उन गोपियों का चरमसीमा प्राप्त परममहत्व। विशेषतः सर्वविलक्षण अतिविस्तृत परम प्रकटित प्रेमरूपी अग्नि की शिखा के ताप से दग्ध गोपियों का नामसंकीर्त्तन करने से उनका स्मरण होता तथा उस विशेष स्मृति द्वारा उनके प्रेम से सम्बन्धित तीक्ष्ण अग्नि की शिखा के अग्रभाग की कणिका के स्पर्शमात्र से विकलता उदित होने के कारण मेरे श्रीगुरुदेव तत्क्षणात् (अर्थात् वैसे नामकीर्त्तन को आरम्भ करते ही) परम विह्वल हो पड़ते, इसलिए वे कभी भी उनका नाम अपने मुख से ग्रहण नहीं कर पाते थे। अतएव उन्होंने श्रीमद्भागवत में संकेतमात्र में श्रीराधारानी एवं गोपियों का नाम लिया है, स्पष्ट रूप से नहीं लिया है ।

यद्यपि श्रीमद्भागवत में अनेकों श्लोकों में गूढ़रूप से श्रीराधानाम का उल्लेख किया गया है, जिसका स्पष्टीकरण आचार्यों ने अपनी टीकाओं में विस्तार से किया है, यहाँ संक्षेप में केवल उन श्लोकों का संकेत मात्र किया जा रहा है; यथा –

'राधस्' शब्द द्वारा राधानाम

नमो नमस्तेऽस्त्वेति श्लोके – निरस्त साम्यातिशयेन राधसेति (भा. 2.4.14)

'लक्ष्मी' शब्द द्वारा राधानाम

वृन्दावनमिति श्लोके – पदाम्बुजलब्ध-लक्ष्मीति (भा. 10.21.10)

'रमा' शब्द द्वारा राधानाम

तत आरभ्येति श्लोके – रमा क्रीडमभून्नृपेति (भा. 10.5.18)

दृष्ट्वेति श्लोके – रमाननाभमिति (भा. 10.29.3)

'श्री' शब्द द्वारा राधानाम

प्रणत कामदमिति श्लोके – श्रीनिकेतनमिति (भा. 10.31.7)

श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमेति (भा.10.29.37)

'इन्दिरा' शब्द द्वारा राधानाम

जयति तेऽधिकमिति श्लोके – श्रयत इन्दिरेति (भा. 10.31.1)

'योगमाया' शब्द द्वारा राधानाम

भगवानपीति श्लोके – योगमायेति (भा. 10.29.1)

'प्रिया' शब्द द्वारा राधानाम

गतिस्मितेति श्लोके – प्रियाः प्रियस्येति (भा. 10.30.3)

'कान्ता' शब्द द्वारा राधानाम

अप्येणपत्न्युपगतेति श्लोके–कान्ताङ्गसङ्गकुचकुंकुम रंजितायेति (भा. 10.30.11)

'गोपी' शब्द द्वारा राधानाम

इत्येवमिति श्लोके – गोपीमनयत्कृष्णेति (भा. 10.30.36)

'तद्' शब्द द्वारा राधानाम

सा च मेने तदाऽऽत्मानमिति (भा. 10.30.37)

'वधू' शब्द द्वारा राधानाम

एवमुक्तेति श्लोके – सा वधूरन्वतप्येति (भा. 10.30.39)

'सखी' शब्द द्वारा राधानाम

अन्विच्छन्त्येति श्लोके – मोहितां दुःखितां सखीमिति (भा. 10.30.41)

'काचित्' शब्द द्वारा राधानाम

काचिन्मधुकरं दृष्ट्वेति (भा.10.47.11)

'राधित' पद द्वारा राधानाम

अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः।
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः॥

(श्रीमद्भागवत 10.30.28)

(जब रासक्रीड़ा के समय श्रीकृष्ण श्रीराधा को लेकर व्रजगोपिकाओं के बीच से अंतर्धान हो जाते हैं, तब गोपियाँ उनका वन-वनांतर में अन्वेषण करती हैं; तभी उन्हें श्रीकृष्ण के चरणचिन्ह दिखाई पड़ते हैं किन्तु समीप ही किसी गोपी के भी चरणचिन्हों को देखकर गोपियाँ परस्पर एक-दूसरे से कहती हैं –) निश्चय ही यह हम लोगों का मन हरण करने वाले सर्वशक्तिमान श्रीकृष्ण की आराधना करने वाली–उनसे परम प्रेम करने वाली 'आराधिका' होगी। उस परम प्रेम के फलस्वरूप ही इस पर रीझकर गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र इस बड़भागिनी को एकान्त में ले गये हैं और हम लोगों को वन में छोड़ दिया है।

श्रीजीवगोस्वामी जी ने अपनी 'वैष्णवतोषणी' टीका में लिखा है –

अनयैव आराधितः आराध्य वशीकृतः, न त्वस्माभिः।
राधयति आराधयतीति श्रीराधेति नाम-कारणञ्च दर्शितम्।

'श्रीकृष्ण के साथ गमन करने वाली इस रमणी के द्वारा ही आराध्य श्रीकृष्ण निश्चय ही वशीभूत हैं, किन्तु हमारे द्वारा नहीं। अर्थात् जो आराधना करती है, इस अर्थ में 'राधा' नाम का कारण भी प्रदर्शित हुआ है।

श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती जी ने भी अपनी 'सारार्थदर्शिनी' टीका में लिखा है –

राधयति आराधयतीति राधेति नाम व्यक्तिर्बभूव मुनिः प्रयत्नेन तदीय नामाप्यधात् परं किन्तु तदास्य चन्द्रास्स्वयं निरेति स्म कृपा नु तस्याः सौभाग्यभेर्य्या इव वादनार्थम्॥

अर्थात् श्रीशुकमुनि के द्वारा अत्यन्त यत्न के साथ श्रीराधा का नाम हृदय के भीतर छुपाने पर भी श्रीराधा की कृपा से राधा-नाम श्रीशुकदेव जी के मुख से प्रगट हो ही गया।

अनया राध्यते कृष्णो भगवान् हरिरीश्वरः।
लीलया रस वाहिन्या तेन राधा प्रकीर्तिता॥

(नारद पाञ्चरात्र)

यह रस वाहिनी लीला द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना करती हैं, इसीलिये इनका नाम राधा है।

कृष्णवांछापूर्तिरूप करे आराधने।
अतएव 'राधिका' नाम पुराणे बाखाने॥

(श्रीचैतन्यचरितामृत, आदिलीला 4.87)

वे श्रीकृष्ण की समस्त वाञ्छाओं को पूर्ण करते हुए उनकी आराधना करती हैं, इसलिए पुराणों में उनको 'राधिका' कहा गया है।

****

श्रीराधास्तोत्रम्

गृहे राधा वने राधा राधा पृष्ठे पुरः स्थिता।
यत्र यत्र स्थिता राधा राधैवाराध्यते मया॥१॥

श्रीकृष्ण कहते हैं – घर में राधा, वन में भी राधा, पीछे भी राधा, आगे भी राधा, जहाँ-तहाँ सर्वत्र राधा ही राधा–मेरे द्वारा सदा-सर्वत्र श्रीराधा की ही आराधना की जाती है।

जिह्वा राधा श्रुतौ राधा राधा नेत्रे हृदि स्थिता।
सर्वांगव्यापिनी राधा राधैवाराध्यते मया॥२॥

जिह्वा पर राधा, कानों में राधा, नेत्र में राधा, हृदय में स्थित राधा, सारे अंगों में व्यापिनी राधा–सर्वत्र राधा की ही आराधना मेरे द्वारा की जाती है।

पूजा राधा जपो राधा राधिका चाभिवन्दने।
स्मृतौ राधा शिरो राधा राधैवाराध्यते मया॥३॥

पूजा में राधा या राधा ही पूजा, जप में राधा, अभिवादन में राधा, स्मृति में राधा, शिर पर भी राधा–सर्वत्र राधा की ही आराधना मेरे द्वारा की जाती है।

गाने राधा गुणे राधा राधिका भोजने गतौ।
रात्रौ राधा दिवा राधा राधैवाराध्यते मया॥४॥

गान में राधा, गुण में भी राधा, भोजन में राधा, गति में भी राधा, रात्री में भी राधा, दिन में भी राधा–सर्वत्र राधा की ही आराधना मेरे द्वारा की जाती है।

माधुर्ये मधुरा राधा महत्त्वे राधिका गुरुः।
सौन्दर्ये सुन्दरी राधा राधैवाराध्यते मया॥५॥

माधुर्य में माधुरी स्वरूपा राधा, महत्त्व में राधा गुरु, सौंदर्य के विषय में सुन्दरी राधा–सर्वत्र राधा की ही आराधना मेरे द्वारा की जाती है।

राधारससुधासिंधू राधा सौभाग्यमंजरी।
राधा व्रजाङ्गनामुख्या राधैवाराध्यते मया॥६॥

राधा ही रससुधासिन्धु है, राधा ही सौभाग्यमंजरी है, व्रजांगनाओं में राधा ही प्रमुख है–सर्वत्र राधा की ही आराधना मेरे द्वारा की जाती है।

राधा पद्मानना पद्मा पद्मोद्भवसुपूजिता।
पद्मविवेचिता राधा राधैवाराध्यते मया॥७॥

राधा पद्मानना है, पद्मस्वरूपा है, पद्मोद्भवा है, पद्म में भी राधा विवेचित है–सर्वत्र राधा की ही आराधना मेरे द्वारा की जाती है।

राधाकृष्णात्मिका नित्यं कृष्णो राधात्मको ध्रुवम्।
वृन्दावनेश्वरी राधा राधैवाराध्यते मया॥८॥

(राधा नित्य कृष्णस्वरूपा हैं और कृष्ण भी निश्चित ही राधा स्वरूप हैं) राधा की आत्मा नित्य श्रीकृष्ण हैं और कृष्ण की आत्मा नित्य श्रीराधा हैं। वृन्दावन की ईश्वरी राधा हैं, सर्वत्र मैं राधा की नित्य आराधना करता हूँ।

जिह्वाग्रे राधिकानाम नेत्राग्रे राधिकातनुः।
कर्णे च राधिका-कीर्तिर्मानसे राधिका सदा॥९॥

जिह्वाग्र पर श्रीराधा-नाम, नेत्रों के आगे श्रीराधा की मूर्ति, कानों के आगे श्रीराधा की कीर्ति और मन में राधिका का स्मरण (चिंतन) सदा बना रहे।

कृष्णेन पठितं स्तोत्रं राधिका-प्रीतये परम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं राधाकृष्णान्तिगो भवेत्॥१०॥

श्रीराधा की परम प्रीति के लिए यह स्तोत्र श्रीकृष्ण ने कहा है। जो प्रयत्नपूर्वक प्रतिदिन इसका पाठ करता है, वह श्रीराधाकृष्ण का प्रिय होता है।

आराधितमनाः कृष्णो राधाराधितमानसः।
कृष्णाकृष्टमना राधाकृष्णेति यः पठेत्॥११॥

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे श्रीराधास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

रसिक महापुरुषों की वाणियों में श्रीराधा-नाम महिमा

परम धन राधा-नाम अधार।

जाहि स्याम मुरली में टेरत, सुमिरत बारंबार॥
जंत्र, मंत्र और वेद तंत्र में, सभी तार कौ तार।
श्रीशुक प्रगट कियौ नहिं यातें, जानि सार कौ सार॥
कोटिन रूप धरे नंदनंदन, तोऊ न पायौ पार।
'व्यासदास' अब प्रगट बखानत डारि भार में भार॥

(श्रीहरिरामव्यासजी कृत व्यासवाणी)

लागी रट राधा श्रीराधा नाम।

ढूँढ़ फिरी वृन्दावन सगरौ, नंद ढिठौना स्याम॥
कै मोहन हे खोरि साँकरी, कै मोहन नँदगांम।
'व्यासदास' की जीवन राधे, धन बरसानौ गाँम॥

(श्रीहरिरामव्यासजी कृत व्यासवाणी)

प्रीति रीति रस बस भये, जदपि मनोहर मैन।
तदपि रटैं निज मुख सदा, श्रीराधे राधे बैन॥

मोहन राधे राधे बैन बोलैं।

प्रीति रीति रस बस नागरि, हरि लियौ प्रेम के मोलैं॥
हास विलास रास राधे सँग, सील आपनौ तोलैं।
'श्रीभट' जदपि मदनमोहन तउ, हारि-हारि सिर डोलैं॥

(श्रीभट्टदेवाचार्यजी कृत युगल शतक)

अनायास सहजहि जु तिहिं, पाई सुकृत सुमाल।
लग लगाय जग जिहिं जपे, मन बच राधा लाल॥

मन बच राधा लाल जपे जिन।
अनायास सहजहिं या जग में, सकल सुकृत फल लाभ लह्यौ तिन॥
जप तप तीरथ नेम पुन्य ब्रत, सुभ साधन आराधन ही बिन।
जै श्रीभट अति उतकट जाकी, महिमा अपरम्पार अगम गिन॥

(श्रीभट्टदेवाचार्यजी कृत युगल शतक)

राधा मम नैन-प्रान, राधा सुख-सम्पत्ति है, राधा मुख-कमल मेरे हिय को आधार है।
धर्म पूज्य लोक इष्ट मित्र वेद राधा ही, राधा कौ नाम मेरी रसना उचार है॥
राधा बिन जानौं हौं जो पै और काहू कों, तौ पै मन लाखि लाखि लाखि कुलगारि है।
राधा ही साधन फल, सिद्ध 'बंशी' राधा ही, मेरे मन चाह श्रीराधा कौ उगार है॥

(श्रीवंशीअलिजी कृत हृदय सर्वस्व)

आधो नाम तारिहैं श्रीराधा।
'रा' के कहे रोग सब मिटिहैं, 'धा' के कहे मिटै सब बाधा॥
जुग अक्षर की महिमा को कहै, गावत वेद पुराण अगाधा।
'अली किशोरी' नाम रटत नित, लागी रहत समाधा॥

(श्रीअलि किशोरीजी)

हमारौ जीवन श्रीराधा-नाम।
श्रीवृषभानुनन्दिनी श्यामा सुमिर लहौं विश्राम॥
कीरति कुँवरि जाप बिनु मेरे और न कोऊ काम।
ललित लड़ैती रंग रंगीली रटत रहौं निशि जाम॥
सर्वसु आस वास श्रीवन की जहाँ प्यारी कौ धाम।
'अलिकिशोरी' पिय गौरी कौ शरण गह्यौ अभिराम॥

(श्रीअलि किशोरीजी)

बलि बलि श्रीराधा नाम प्रेम रस रंग भर्‌यो।
रसिक अनन्यनि जानि सुसर्वस उर धर्‌यो॥
रटत रहैं दिन रैन मगन मन सर्वदा।
परम धरम धन धाम नहिं बिसरै कदा॥
कदा विसरत नहि नेही लाल उरमाला रची।
रही जगमगि नवल हिय में मनौ मनि गनि सौं खची॥
चतुर वेद कौ सार संचित प्रेम विवरन निज रह्यो।
बलि बलि श्रीराधा नाम प्रेम रस रंग भर्‌यो॥

(श्रीअलबेली अलिजी)

अहा कहा रसमय रच्यौ, द्वै अक्षर कौ नाम।
वंशी की जीवनि यहै, मन्त्र परम अभिराम॥

रट री मुरली राधे राधे।
येई मेरे साधन आराधन, रस सींवा गुण रूप अगाधे॥
जा कारन मैं मृदु मुख धारी, सो बिसरै जिन तू पल आधे।
वृन्दावन हित मंत्र मोहनी, जपौ निरन्तर पूजै साधे॥

(चाचा वृन्दावनदास जी)

अम्ब की डारि कोकिला बैठी, राधा राधा गावै हो।
प्रीतम रसिक देखिकैं पुनि-पुनि, सुनि-सुनि ग्रीव ढुरावैं हो॥
तरु की छाँह बिरमि रहे दोऊ, खग गावत जस भावै हो।
वृंदावन हित रूप स्याम, ता सुर सौं सुर जु मिलावैं हो॥

(चाचा वृन्दावनदास जी)

हमारे बल श्रीराधा-नाम॥

काहू के बल भजन भावना, जप व्रत तीरथ धाम।
परम मंत्र श्रीहित जू दीनौं, ताहि जपौं सब याम॥
विधि निषेध मग छोड़ लह्यो, हम अनन्य धर्म अभिराम।
जै श्रीबनमाली मिल्यो वास वनराज, नहीं मोक्ष सौं काम॥

(श्रीवनचंद्र जी)

सुनि सुख पावत राधा-नाम।

राधा-नाम जपत तिनके हिय, बसत सनेही स्याम॥
दरस परस्पर रूप-माधुरी, पाये पूरन काम।
हित गुलाब 'परमानँद' जीवन, राधा सब सुख-धाम॥

(श्रीहितपरमानंद दास जी)

मैं वारी रस-सागर राधा-नाम।

पशु-पंछी नर-नारि जपत, राधा-राधा श्रीवृन्दावन धाम॥
रोम-रोम पिय के हिय-जिय जो, तन-मन में अभिराम।
हित गुलाब 'परमानँद' जीवन, राधा साधा पूरन काम॥

(श्रीहितपरमानंद दास जी)

लालन प्यारौ माला जपै राधा-नाम की।

सुनिये हित सौं राधे महारानी, श्रीवृन्दावन धाम की॥
तन-मन राधे-राधे रट लागी, निसि-दिन आठौं जाम की।
राधाबल्लभ हित 'परमानँद' अब सुधि लीजै स्याम की॥

(श्रीहितपरमानंद दास जी)

रसाइन मेरी राधा-नाम।
अष्ट सिद्धि नव निधि चरननि-तर, बस भये मोहन स्याम॥
कामधेनु-कल्पद्रुम मोकौं, सुमिरति पूरन काम।
जिनि कौं माया ब्रह्म जपत हैं, निसि-दिन आठौं याम॥
भुक्ति-मुक्ति संपति सरूप, कविता सुनि सब विश्राम।
राधाबल्लभ 'हित परमानंद' सुर्लभ सब सुख धाम॥

(श्रीहितपरमानंद दास जी)

व्याससुवन हरिवंश जू गुरु श्रीराधा कीन।
राधा-राधा मन्त्र जपि, राधा दरसन दीन॥

राधा राधे राधिके, राधे रूप निधान।
राधा राधा मन्त्र निजु, हित परमानंद प्रान॥
प्रिया प्रान प्यारी प्रिये, प्रेम रूपनी वाम।
हित परमानंद नित जपत, राधा राधा नाम॥
कुँवरि लड़ैती लाड़िली, लाड़ गहेली भाम।
परमानंद हित सौं जपत, राधा राधा श्याम॥

(श्रीहितपरमानंद दास जी)

सब रस राधा नाम भर्‌यौ है।
मुरली माँहिं निरंतर गावत, मोहन अमल पर्‌यौ है॥
भींजि-भींजि उर जात प्रेम सौं, चित वित गयौ हर्‌यौ है।
वृन्दावन हित रूप जाउँ बलि, इन द्वै अक्षर सचि सु धर्‌यौ है॥

(हित वृन्दावनदास जी)

श्रीराधे राधे जो जन कहै। महा प्रेम रस सोई लहै॥
प्रिया लाल तिनके सुख ढरैं। रीझि रीझि अंक में भरैं॥
छिन छिन अति आनंद बढ़ावैं। श्रीकुंजबिहारिनि निरखि सिहावैं॥
यही बात सब सुख कौ सार। रसिकनि जीवनि प्रान अधार॥

(श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू)

महा सुख प्रिया नाम अधार।
अति आनंद रूप निधि रस निधि, सकल सार को सार॥
जाकी रसना भूलि हूँ निकसै होइ प्रिया उरहार।
श्रीललित रसिकवर की निजु जीवनि, अद्‌भुत नित्यबिहार॥

(श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू)

जब जब मुरली कान्ह बजावत।
तब-तब राधा नाम उचारत, बारंबार रिझावत॥
तुम रमनी वह रमन तुम्हारे, वैसेहिं मोहिं जनावत।
मुरली भई सौति जो माई, तेरी टहल करावत॥
वह दासी तुम हरि-अर्धांगिनि, यह मेरैं मन आवत॥
सूर प्रगट ताही सौं कहि-कहि, तुमकौं स्याम बुलावत॥

(श्रीसूरदासजी)

रसिक शिरमौर ढौरि लगावत गावत राधा राधा नाम।
कुंजभवन बैठे मनमोहन अलिगोहन सोहन बोलतं मुख तेरोई गुणग्राम॥
श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तन मन रोम रोम सुखराशि वाम।
सूरदास प्रभु गिरिवरधर को चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनुक वनधाम॥

(श्रीसूरदासजी)

रे मन राधे राधे रटि निशिभोर।
तजि उपाधि साधन सन्तत जन्म रहत नित नित्य किशोर॥
तन मन एक प्राण प्रीतम संग रमत विपिन वर जीवन जोर।
दास 'किशोर' हुलस परस्पर परम मित्र चितवत चितचोर॥

(श्रीकिशोरदास जी)

श्रीराधे अद्भुत नाम सुहायो।
हरि हर विरंचि रटत हैं निरन्तर, वेद पुराणन गायो॥
नन्द को नन्दन ब्रज को चन्द्रमा सुनि के याहि लुभायो।
'किशोरीदास' बृषभानुनंदिनी के चरण कमल चित्त लायौ॥

(श्री किशोरीदासजी)

राधा नाम अदभुत चंद।
बरसत नित श्रृंगार सुधारस, सरसत अमित अनंद॥
जासु प्रभा अंतस-तम नासन, जात सकल दुखद्वन्द।
ललितकिशोरी सदा एकरस क्यों न भजसि मतिमंद॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधा नाम पै मैं वारी।
मधुर मधुर मुरली में हित सों गावत रसिक बिहारी॥
जा सुमरै अनुराग होत दृग जुगल रूप हितकारी।
ललितकिशोरी छवि रस आगे षटरस लागत खारी॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधा नाम की गति न्यारी।
सपनेहुँ रसना पर आवत, होत बिबस बन कुञ्ज बिहारी॥
सुन्दर दिव्य किशोर वैस नव, बानी मधुर रहत इक सारी।
श्रीवृन्दावन बास निरंतर पावत ललित किशोरी वारी॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधा नाम को आराध।
साधन अन्य त्यागि कै मनुवाँ याही को दृढ़ साध॥
मिलिहैं ललित किशोरी नागर शोभा सिंधु अगाध।
फलिहैं सकल मनोरथ ह्वै है श्रीबन वास अबाध॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधा नाम को आधार।
रसिक लालवर रटत निरंतर, सरबस रस को सार॥
सब गुण हीन मलीन दीन, अति पतितन में सरदार।
ललित किशोरी तासु भरोसे, सोवत पाँव पसार॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधा नाम ही सों काम।
राधा नाम परम धन मेरे कल्पद्रुम अभिराम॥
राधा नाम लिये सुख दरसै श्रीवृन्दावन धाम।
ललितकिशोरी रटौं निरंतर राधा राधा नाम॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधा नाम को उर धार।
मिलिहैं रसिक मुकुटमणि मोहन, आपुहि कुञ्जन द्वार॥
आठों याम छकेंगी अँखियाँ, छवि निकुंज विहार।
'ललित किशोरी' फीके परिहैं, सरवस सुख संसार॥

(श्रीललितकिशोरीजी कृत अभिलाष माधुरी)

राधिका कृष्ण कौ नैंन लखों सखी, राधिका कृष्ण के गुण गाऊँ।
राधिका कृष्ण रटौं रसना नित, राधिका कृष्ण को उर ध्याऊँ॥
राधिका कृष्ण की मोहनी मूरत, ताकी सदा शुचि झूठन पाऊँ।
सरस कहैं करौ सेवा निरंतर, कुंज को त्याग कै अनत न जाऊँ॥

(श्रीसरसदेव जी)

राधा नाम मुकटमनि मंत्र।
आगम वेद पुरान अगोचर ढूढे त्रिभवन तंत्र॥
मोहन मन कों वसीकरन है भूलें हूँ नहीं अंत्र।
रसिक रूप गावति निसिवासर हरषि बजावति जंत्र॥

(श्रीरूपसखी जी)

जिनके मुख नहीं निसरत राधे।
तिनके मुख कूकर सूकर सम दीखत गात मिटै नहीं बाधे॥
इत उत फिरत चहुँ चितवत, आप ते आप लगे अपराधे।
प्रेमसखी इक नाम वैद्य बिनु तड़फत हैं भव-सिंधु अगाधे॥

(श्रीप्रेमसखी जी)

जाकैं श्री राधा हैं इष्ट।
ताही को नित मंगल जग में, सब ही मिटैं अरिष्ट॥
राधा नाम समान न कोऊ, मधुर रसन में मिष्ट।
गुरु-प्रसाद तें रतन अली के, अब जागै हैं दिष्ट॥

(श्रीरतनअलिजी)

रटत पीउ राधा श्रीराधा।
वृंदावन सनी ठकुरानी सोभा सिंधु अगाधा॥
बिधु बदनी रास रस सदनी हित रदनी छबि बाधा।
'केवल' तुम बिनु ब्रज नाइक जिउ नैनन मों जलु आधा॥

(श्रीकेवल राम जी)

राधा राधा रटि राधा राधा रटि मेरी रसना रसीली भई।
ज्यौं हीं ज्यौं पीवति या रस कों त्यौं त्यौं प्यास नई॥
ब्रजजीवन की परम सजीवन सो निज जीवनि जानि लई।
आनंदघन उमंग-झर लाग्यौ ह्वै रही नाममई॥

(श्रीआनन्दघनजी, घनानंद ग्रंथावली)

वेदन कौ सार, सार सबही पुराणन कौ,
रसहू कौ सार निरधार कर राख्यौ है।
भूतल रसातल औ लोक ब्रजमंडल कौ,
सबही कौ सार एक वृन्दावन भाख्यौ है॥
जिनहूँ कौ सार नव निकुंज-बिहार नित,
सो तो समूह सुख ललितादिक चाख्यौ है।
तिनहूँ कौ सार आली श्रीगुरु सिखायौ जिन,
'प्रेमसखी' राधा-महामंत्र उर नाख्यौ है॥

(श्रीप्रेमदासजी)

हमारे धन श्यामाजू कौ नाम।
जाकौं रटत निरंतर मोहन, नंदनंदन घनश्याम॥
प्रतिदिन नव-नव महामाधुरी, बरसति आठौ याम।
'गुनमंजरि' नवकुंज मिलावै, श्रीवृन्दावन धाम॥

(श्रीगुणमंजरीदास जी कृत नवल-रसिक-पदावली)

मुरली की माला करी, नंद लाला बस हेत।
राधे राधे रटत नित, गूढ़ मन्त्र संकेत॥

जाको नाम शेष रटैं शिव आदि सुर रटैं, मुनिगन नर-नारि रटत न हटहीं।
देव औ अदेव वधू नृप बधू, रटत हैं नाम छाँड़ि घर के कपटहीं॥
कमला कमल मरू अमल रटत नाम, सेवा सावधान रहे पायन निकटहीं।
जाको सब रटैं सो 'नागर' तट जमुना के, मुरली में राधे राधे नाम नित्य रटहीं॥

(श्रीनागरीदास जी)

श्रीराधा राधा रटौ, त्याग जगत की आस।
ब्रज वीथिन विचरत रहौ, कर वृन्दावन वास॥
कर वृन्दावन वास रसिकजन संगति कीजै।
प्रेम पंथ मन ढरौ त्याग विष अमृत पीजै॥
कहैं 'लाल बलबीर' होय आनन्द अगाधा।
निश्चै करिकै चित्त कहौ श्रीराधा राधा॥

(श्रीलालबलवीर जी कृत ब्रजबिनोद)

राधा राधा गावैं तहाँ दौर दौर जाओ प्यारे, राधा गुण जहाँ नहीं भूल के न डट रे।
राधा जू की चरचा सलोनी लोनी होय जहाँ, सुनि लगाय श्रवण तहाँ ते न हट रे॥
राधा २ नाम ही सों काम राख आठों याम, लाल बलवीर जगजाल कू न डट रे।
ऐरे मन मीत तू भूल के न होय अचेत, राधा रट राधा रट राधा राधा रट रे॥

(श्रीलालबलवीर जी कृत ब्रजबिनोद)

एरे मन मेरे तोसों विनती करत हौं रे, काहे कौं भ्रमंत ब्रजभूमि पंथ गह रे।
लता द्रुम बेलिन में राधा राधा धुन होय, तहाँ जाय काम क्रोध लोभ मोह दह रे॥
'लाल बलबीर' जन जुगल उपासी सबै, उनहीं की पद रज सीस धार लह रे।
और की न आस कीजै वृन्दावन वास सदाँ, राधेस्याम स्याम-स्याम राधेस्याम कह रे॥

(श्रीलालबलवीर जी कृत ब्रजबिनोद)

डोलत फिरत मुख बोलत में राधे राधे, और जग जालन के ख्यालन सों हट रे।
सोवत जागत मग जोवत में राधे राधे, राधे रट राधे त्याग उर ते कपट रे॥
'लाल बलबीर' धर धीर रट राधे राधे, टरैं कोटि बाधे रट राधे झटपट रे।
एरे मन मेरे चेत भूलिकें न हो अचेत, राधे रट राधे रट राधे राधे रट रे॥

(श्रीलालबलवीर जी कृत ब्रजबिनोद)

डोलत बोलत राधिका राधिका, राधा रटो सुख होय अगाधा।
सोवत जागत राधिका राधिका, राधिका नाम सबै सुख साधा॥
लेतहु देतहु राधिका राधिका तो 'बलबीर' टरै जग बाधा।
होय अनंद अगाधा तबै, दिन-रैन कहौ मुख राधा श्रीराधा॥

(श्रीलालबलवीर जी कृत ब्रजबिनोद)

राधा-राधा जप तू मना रे।
नाम सुधा लीला दरसावे, रास भरोस प्रिया चरणा रे॥
रसिक रास-रस मिलि हैं तोहे, जो हो जा नाम शरणा रे।
हितगोपाल श्रीप्रियाशरण हो, वृन्दावन रस मन लगना रे॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

सखी श्रीराधा नाम मम प्रान।
नाम पियारो जीवन सर्वसु, करूँ निरन्तर गान॥
याके बल में काहू न गिनिहौं, भरी रहूँ अभिमान।
छूटे नहीं छुटाये सजनी, हित निधि रस की खान॥
जपौं नाम तेरो कुञ्ज दुआरे, सुनूँ रसीली तान।
श्रीगोपाल हित प्रिया नाम की, शरण गही अब आन॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

अरे मन राधा नाम बटोर।
ये सम्पति तेरे जीवन की, छिन-छिन याहि निहोर॥
वृन्दाविपिन दिव्य हिय आवे, सहज मिलेंगे नंदकिशोर।
ललितादिक संग प्यारी मिलि हैं, हृदय कुंज होगी झकझोर॥
नाम-प्राण स्वाँस-स्वाँस में, नाम सुधा में हो रसबोर।
गोपाल हरि हितप्रिया नाम सौं, वेगहि दरसें कृपा करोर॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

जपौ मन राधा राधा नाम।
जीवन अब तो वृथा जात है, करलो ये इक काम॥
राधा नाम जपत हैं जो जन, संग रहे घनश्याम।
सखियन नाम ये प्राण भाव तो, सुखदायक अभिराम॥
दर-दर-दर भटको जिन प्यारे, बस वृंदावन धाम।
श्रीगोपालहित नाम प्राणधन, सुंदर सुखद ललाम॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

राधा नाम परम सुखदाई।
जाके सुमिरत उर में आवत, सुन्दर कुँवर कन्हाई॥
दिव्य केलि श्रीवृन्दावन की, मन में रही समाई।
हितमय रसमय नाम पियारो, रसिकन के मन भाई॥
कालिंदी की लहर-लहर ने, राधा-राधा धूम मचाई।
हितगोपाल प्रिया नाम नित, रसना पै रह्यौ छाई॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

धन-धन प्यारो राधा नाम।
आठों याम हृदय धरि देखो, उर आवे घनश्याम॥
जाकी महिमा पै नित बारौं, कोटि रमा रतिकाम।
श्रीराधा गोपाल हरी हित, निज नयना अभिराम॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

मन श्रीराधा-राधा कहि रे।
नाम निरंतर रसना पीवै, दृढ़कर याको गहि रे॥
यह जग सपनो अपनो नाँहीं, नाम सुधा-रस बहि रे।
श्रीगोपालहित हरि स्वामिनि, जैसे राखें रहि रे॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

मन तू राधा-राधा भज ले।
जाहि रटत निरन्तर शुक मुनि, शिव नारद सनकादिक अज ले॥
औसर जात बार नहिं लागै, काल रह्यौ सिर गज ले।
नव-नागर गोपाल प्रिया के, चरण चिन्ह की रज ले॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

हमारो धन राधा-राधा नाम।
नामहिं जीवन धन है अब तो, और ठौर नहिं ठाम॥
रसना नाम सुधा रस पीवै, उर नाँचै श्रीधाम।
राधा नामहिं मीठो लागै, भूले सब ही काम॥
अरे बावरे छाँड़ि नाम मणि, जाँचत काहे छदाम।
श्रीगोपालहित जपौ निरन्तर, तब मिलिहै विश्राम॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

राधा-राधा रट ले रसना।
फेरि जन्म ये बहुरि न मिलिहै, रह जाये यही कल्पना॥
रोम-रोम में नाम तू भरले, छिन-छिन जपना रटना।
तेरी बन जाये नाम रटन से, हरि आवें उर बसना॥
मन दर्पण निर्मल हो जावे, जन्म-जन्म की मिटे भटकना।
श्रीगोपालहित प्रिया नाम में, अब तो चित्त अटकना॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

राधा नाम जपो दिन रैना।
जो कोई राधा नाम सुनावै, तबहिं परै हिय चैना॥
श्रीराधा गाऊँ लाड़ लड़ाऊँ, राधा सुने ये बैना।
रवि तनया प्यारी जब देखूँ, बोलूँ कर-कर सैना॥
हितगोपाल नाम की महिमा, कैसेहु कहत बनै ना॥

(श्रीहित गोपालदास जी कृत निकुंज-रस-वल्लरी)

अहो लड़ैती इतनी मोपै कृपा करौ बलि जाऊँ।
जागत सोवत रटौं निरंतर राधा राधा नाऊँ॥
हिय जिय रसना स्वाँस-स्वाँस प्रति रोम रोम रट लाऊँ।
जौ लौं नाम साँस तब ही लौं एक मेक ह्वै जाऊँ॥
जान परै नहिं साँझ सबेरौ ऐसे जनम गवाऊँ।
श्रीहित वेगि ढरौ 'भोरी' पै हुलसि-हुलसि जस गाऊँ॥

(श्रीहित भोरी सखी जी)

हूँ तो चेरी राधे कौ, नाम रटूँ राधे कौ, सुमिरन नित राधे कौ राधे कौ ध्यान जू।
भजन करूं राधे कौ, इष्ट रखूँ राधे कौ, उपास मेरैं राधे कौ, राधिका ही प्राण जू॥
तन मन कर आठौं जाम, आस राधे की मोकों, आसरौ राधे कौ और ना पहिचान जू।
कल्यान की करता और हरता हैं चिन्ता की, लालदास वारी तापै निश्चै यहि जान जू॥

(श्री लालदासजी)

जो कोऊ श्रीराधा यश गावैं।
अति आशक्त रूप रस लोभी श्याम तहाँ उठ धावैं॥
प्रफुलित कुसुम कमल पर जैसे भ्रमर आन मड़रावैं।
त्योंही राधा नाम उचारत विवश कृष्ण चले आवैं॥
राधा नाम लेत ता आगें, मोहन वेणु बजावैं।
प्रेम बँध्यौ सु संगहि डोलें तासौ नेह जनावैं॥
राधा नाम उपासक को हरि आपुन ऋणी कहावैं।
ताही हेतु किशोरी हित सों कर गह विपिन बसावैं॥

(श्रीकिशोरी शरण अलिजी)

हमारैं माई राधा नाम की टेक।
राधा नाम उचारत मुख ते, जद्यपि ललित अनेक॥
राधा नाम होहिं जिहिं ग्रन्थहि, पढ़त और नहीं नेंक।
राधा नाम सुनैं निजु श्रवननि, कहै जु कोउ कितेक॥
राधा नाम जपैं हम निशि-दिन, और दिए सब छेक।
अली किशोरी राधा गावैं, लीनौं व्रत यह एक॥

(श्रीकिशोरी शरण अलिजी)

प्यारे तेरी वंशी राधा-राधा बोलै।
राधा रूप दिखाइ आपनौं, बिनहु मोल लियौ मोलै॥
वंशी-वंशी करि दंपति के, प्रेम-मंजूषा खोलै।
'प्रियासखी' राधा सुनि मोंहन, गोंहन लाग्यौ डोलै॥

(श्रीप्रियासखीजी)

राधा से भी लगता मुझको अधिक मधुर प्रिय 'राधा' नाम।
'राधा' शब्द कान पड़ते ही खिल उठती हिय-कली तमाम॥
मूल्य नित्य निश्चित है मेरा प्रेम प्रपूरित राधा नाम।
चाहे जो खरीद ले ऐसा मुझे सुनाकर राधा-नाम॥

(भाईजी श्रीहनुमानप्रसादपोद्दारजी कृत पद रत्नाकर)

जिह्वा के मम अग्रभाग पर, रहे विराजित राधा नाम।
मेरी आँखों के सम्मुख नित, रहे राधिका-रूप ललाम॥
कानों में नित रहे गूँजती, राधा-कीर्ति-कथा अभिराम।
बना रहे श्रीश्रीराधा का, गुण-गण-चिन्तन मन अविराम॥

(भाईजी श्रीहनुमानप्रसादपोद्दारजी कृत पद रत्नाकर)

तुम बड़भागिनी कानन रानी तो जस पंछिन भावै हो।
कहा मिठास नाम श्रीराधा मोहन चितहिं चुरावै हो॥
वारौं अमी नाम द्वै अक्षर को सम उपमा पावै हो।
वृन्दावन हित रूप न्याइ यौं सर्वेश्वरि जु कहावै हो॥

(श्रीहित चाचा वृन्दावनदास जी)

मेरे एक राधा नाम आधार।
कोउ देखत निज रूप ब्रह्म पर, निराकार अबिकार॥
कोउ कमलापति कोउ गिरिजापति नाम-रूप उर-धार।
भक्त-कल्पतरु राम-कृष्ण कोउ सेवत अति सत्कार॥
हौं जड़ मति, अति मूढ़ हठीलौ, नटखट निपट गँवार।
राधे-राधे रटौं निरन्तर, मानि सार कौ सार॥

गिनत बनै ना अघ अगनित अपार सोऊ,
एक बार राधा नाम मुख सौं उचारै जो।
सोचत हिय बार बार मोहन मन अति उदार,
याकौं कहा दीजै याकी पटतर अनुसारै को॥
प्यारी नाम अमृत रस प्यारौ सुनि बिबस होत,
धन्य धन्य सोई अति हित सौं पुकारै हो।
ताकी महिमा की सीम परसि सकै जो कौन,
ललित लड़ैती पद सेवा उर धारै सो॥

जय जय राधा नाम, वृन्दावन जार धाम, कृष्णसुख विलासेर निधि।
हेनो राधा-गुणगान, ना शुनिलो मोर कान, वञ्चित करिलो मोरे विधि॥

(श्रीप्रेमभक्तिचन्द्रिका 108)

'राधा राधा नाम कहैं सब नाम लली कौ बाधा नासी।'

सब वेद पुराणन में, यह सार विचारा है।
प्रभु को वश करने का, राधा नाम हमारा है॥
हरि वंशी में गाते, दिन-रात रटा करते।
बस दो ही अक्षर का, राधा नाम हमारा है॥
ऐ दुनिया के लोगो, सब कान खोल सुन लो।
परतत्व जानने का, राधा नाम हमारा है॥
हम जप-तप नहि जानें, कुछ और नहीं मानें।
अंधे की लकड़ी सा, राधा नाम हमारा है॥
हम बहुत रहे भटके, जग में अटके-अटके।
अब मिला किनारा है, राधा नाम हमारा है॥
कुंजन जा यमुना तट, राधा रटते नटखट।
राधा पद को ध्याते, राधा आधारा है॥
राधा गाते सुनते, राधा हित ही रोते।
हरि के नेत्रों बहती, आँसू की धारा है॥
श्री कृष्ण प्रेम पाते, जो श्री राधा रटते।
महारास दिलाने को, राधा नाम हमारा है॥
हरि वश में ही रहते, जो श्री राधा रटते।
हरि को संग रखने का, राधा नाम उजारा है॥
हरि आगे पीछे और, दायें बाएँ चलते।
हरि सेवक बन जाते, राधा नाम ही प्यारा है॥
क्यों कठिन तपस्या कर, जोगी भटका करते।
बेसहारों निर्बल का, राधा नाम सहारा है॥

(श्रीरमेशबाबाजी कृत बरसाना)

मेरौ राधा नाम सहारौ, जैसे प्यासे कूँ पानी॥
राधा नाम रटैं नन्द-नन्दन
याते श्याम भये जग वन्दन
सिद्ध कियो मुरली की तानन
राधा नाम प्रताप सबै मोहै मुरली रानी।
शिव ने श्री राधा जस गायो
याते महारास रस पायो
रासेश्वरी कृपा दरसायो
राधा नाम प्रताप कृष्ण-रस सब जग ने जानी।
राधा नाम जप्यो ब्रज गोपिन
कृष्ण प्रेमरस चाख्यो आलिन
जग में पूज्य भईं ये ग्वालिन
जिनकी चरणधूर विधि माँगैं सनकादिक ज्ञानी।
वृन्दावन राधा महारानी
पक्षी बोलें राधा बानी
ये लीला देवन नाय जानी
राधा नाम रटै सो देखै लीला रस खानी॥

(श्रीरमेशबाबाजी कृत रसिया रसेश्वरी)

आंधरे की लाकड़ी है मेरौ राधा नाम,
औरन सौं नहीं मेरो काम।
मेरी तो हरेंगी बाधा राधा, देंगी चरनन प्रीति अगाधा।
मेरी राधा सब सुख साधा, जाकी श्याम करे आराधा॥

(श्रीरमेशबाबाजी कृत कीर्तन-संग्रह)

कन्हैया राधा रानी कौ भयो बिना मोल कौ चेरो॥

राधा राधा रटतो डोलै
राधा गावै राधा बोलै
बंशी में गावै राधा को, भयो बिना मोल...।

राधा नाम लिखे सब अंगन
राधा नाम गढ्यो सब गहनन
पीताम्बर रंग राधा को, भयो बिना मोल...।

मोर मुकुट में राधे राधे
कानन कुण्डल राधे राधे
तिलक नाम राधा को, भयो बिना मोल...।

हार गरे में राधे राधे
कठुला कंगन राधे राधे
गूंठी में नाम राधा को, भयो बिना मोल...।

कमर किंकिणी राधे राधे
घुँघरू बोलैं राधे राधे
नाँचैं लै नाम राधा को, भयो बिना मोल...।

जब देखूँ डोलै बरसानो
राधा कारन भयो दिवानो
दरस चाहै राधा को, भयो बिना मोल...।

गहवरवन आवैं राधा जब
पाय दरस वाकी प्यास बुझै तब
चरन दाबै राधा कौ, भयो बिना मोल...॥

(श्रीरमेशबाबाजी कृत रसिया रसेश्वरी)

श्रीवृन्दावन धाम अपार रटे जा राधे राधे।
जपे जा राधे राधे भजे जा राधे राधे॥
जो राधा राधा गावे सो प्रेम पदारथ पावे।
बाको बेड़ा हो जाय पार रटे जा राधे राधे॥
जो राधानाम न होतो, रसराज विचारो रोतो।
नहीं होतो कृष्ण अवतार जपे जा राधे राधे॥
या वृन्दावन की लीला मत समझो गुड़ को चीला।
यामें सुर नर मुनि गये हार जपे जा राधे राधे॥
बृन्दावन रास रचायो शिव गोपी भेष बनायो।
हो वंशीवट कियो विहार जपे जा राधे राधे॥
यह प्रेम की अकथ कहानी, नहीं समझै ज्ञानी ध्यानी।
हो याहि समझें ब्रज की नार, जपे जा राधे राधे॥
या बृन्दावन में आयो, तेने राधा नाम न गायो।
तेरे जीवन को धिक्कार, जपे जा राधे राधे॥
राधा बृषभान दुलारी, श्रीकृष्णचन्द्र की प्यारी।
हो वह कीरति राज कुमार, जपे जा राधे राधे॥
मोहन मुरली में गावे, वन वन में धेनु चरावे।
सुनि-सुनि मगन होंय ब्रज नारि, जपे जा राधे राधे॥
या वृन्दावन के वासी, श्री राधा नाम उपासी।
हो यहाँ है रह्यौ नित्य विहार, जपे जा राधे राधे॥
कुञ्जन में रास रचायो, 'श्रीअलीमाधुरी' गायो।
वह निरखें नित्य विहार, जपे जा राधे राधे॥

(श्रीअली माधुरीजी)

****

श्रीराधा-नाम महिमा दोहावली

रसना कटौ जु अन रटौं, निरखि अन फुटौ नैन।
श्रवण फुटौ जो अन सुनौं, श्रीराधा यश बैन॥

श्रीराधा राधा रटौं, राधा ही कौ ध्यान।
सदाँ लाल बलबीर उर, राधा नाम प्रधान॥

श्रीराधे राधे रटौं, राधे कौ उर ध्यान।
मम कुल देवी देवता, राधा रमण सुजान॥

तुलसी या ब्रजभूमि में कहा राम सौं बैर।
राधा राधा रटत हैं आक ढाक अरु खैर॥

वृन्दावन के वृक्ष कौ, मरम न जाने कोय।
डाल डाल और पात पै, श्री राधे राधे होय॥

कबिरा धारा अगम की सद्गुरु दयी बताय।
उलट ताहि पढ़िये सदा स्वामी संग लगाय॥

राधा राधा जे कहत, चहुँ दिश तिनहिं हमेश।
आयुध लै रक्षा करत, हरिहर वरुण सुरेश॥

काल डरै, जमराज डरै, तिहुँ लोक डरै, न करै कछु बाधा।
रच्छक चक्र फिरै ता ऊपर, जो नर भूलि उचारै राधा॥

जे जे राधा नाम कौं, भजत जगत में जान।
ते ते सब हमरे सदा, ह्वैंगे जीवन प्रान॥

कुँवरि किशोरी नाम सौं, उपज्यौ दृढ़ विस्वास।
करुनानिधि मृदुल चित्त अति, तातै बढ़ी जिय आस॥

राधा राधा नाम जे सपनेहुँ में लेत।
ताको मोहन साँवरो रीझि अपनपौ देत॥

मीठौ राधा नाम यश, जिन चाख्यौ एक बार।
बहुरि न आये गर्भ में, उतर गये भव पार॥

जेते मीठे जगत रस, सबकौ करुऔ अंत।
मूल चूल मीठौ सदा, राधा नाम महंत॥

ब्रज की रज में लोट कर, यमुना जल कर पान।
श्रीराधा राधा रटते, या तन सों निकलें प्रान॥

नर कौन? तौन, जौन 'राधे-राधे' नाम रटै।

मनुष्य जन्म का परम फल, श्रीराधा राधा नाम।
राधा रटे बाधा मिटै, मिले श्रीवृन्दावन धाम॥

हाड़ मांस की पूतरी, हरि तोय दई अमोल।
जबलों यामें शुक बसै, राधा राधा बोल॥

राधा-राधा कहत हैं, जे नर आठौं याम।
ते भवसिंधु उलंघी के, बसत सदाँ ब्रजधाम॥

राधा राधा जे कहैं, ते न परैं भवफंद।
जासु कंध पर कमल कर, धरे रहत व्रजचंद॥

प्यारे राधा राधा रटो, भगो नट नागर आवेगो।
तेरे हिय में उठे हिलोर, प्रेम सागर लहरावेगो॥

तन पुलकित रोमांच करि, नैननि नीर बहाव।
प्रेममगन उन्मत्त ह्वै, राधा राधा गाव॥

राधा राधा रटत ही सब बाधा मिट जाय।
कोटि जनम की आपदा, राधा नाम सौं जाय॥

राधा राधा रटत ही, बाधा हटत हजार।
सिद्धि सकल लै प्रेमघन, पहुँचत नन्द कुमार॥

श्री राधा राधा रटत, हटत सकल दुख द्वन्द।
उमड़त सुख को सिंधु उर, ध्यान धरत नँदनन्द॥

बरसानो जानो नहीं, जप्यौ न राधा नाम।
तौ तैनें जान्यौ कहा, ब्रज को तत्त्व महान॥

राधा मेरी संपदा, जिय की जीवन-मूल।
राधा राधा रट सदा, रोम-रोम अनुकूल॥

अज शिव सिद्ध सुरेश मुख, जपत रहत निसि जाम।
बाधा जनकी हरत है, राधा राधा नाम॥

श्रवण सुनें चहुँ ओर सों, राधा नाम पुकार।
नैनन में छायो रहे, निसिदिन युगल विहार॥

मंगलनिधि श्रीराधिका, मंगल राधा नाम।
राधा राधा रट्यौ कर, जो चाहै विश्राम॥

राधा नाम परम सुखदाई, भजतहिं कृपा करहिं यदुराई॥
यशुमति नंदन पीछे फिरिहैं, जो कोऊ राधा नाम सुमिरिहैं॥

एक बेर राधे कहे कोटि अघ नाश होय, धन्य हैं रटें जो राधे राधे रट लायकें।
ग्रंथन बखानी ब्रह्म पार नहिं पायौ तेरौ, मुक्त भई मुक्ति श्रीराधे गुण गायकें॥

श्रीराधे राधे जो जन कहै, महा प्रेम रस सोई लहै।
प्रिया लाल तिनके सुख ढरैं, रीझि रीझि अंक में भरैं॥

सब ही कौ सार भवसागर तें पार करै,
मन में विचार एक राधा नाम जान्यौ है॥

एरे मन मतवारे, छोड़ दुनिया के द्वारे।
राधा नाम के सहारे, सौंप जीवन मरण॥
मन भूल मत जैयो, राधा रानी के चरण॥

राधा राधा राधा कहौं। कहि कहि राधा राधा लहौं॥
राधा जानौं राधा मानौं। मन राधा-रस ही मैं सानौं॥

'रा' अक्षर श्रीगौरतन 'धा' अक्षर घनश्याम।
सहज परस्पर आत्मरति विधि मिलि राधा नाम॥
गौर देत नित सर्वसुख श्याम रूप ह्वै लेत।
रा दाने धा धारणे राधानाम समेत॥

अहा कहा रसमय रच्यौ, द्वै अक्षर कौ नाम।
वंशी की जीवनि यहै, मन्त्र परम अभिराम॥
कहत सुनत जो देत है प्रीतम उर अह्लाद।
द्वै अक्षर में अमीते कोटिक गुनौ सवाद॥

****

बरसानौं ब्रज मुकुटमनि, धनि वृषभानु महीप।
तप कौ पूरन फल मिल्यौ, श्रीराधा कुल-दीप॥

राधा के जनमत भयौ, धरती कौ सिरमौर।
राधा-राधा सब जपत, बरसाने के ठौर॥

सब बरसाने में सुनत, राधा-राधा नाम।
राधा लाड़ लड़ाइवौ, निसि-दिन और न काम॥

बरसाने की राधिका, राधे कौ यह गाम।
बरसाने के नारि-नर, गावत राधा नाम॥

पंछी बरसाने जिते, पशु अरु गोपी-गोप।
सबके हिय जिय राधिका, राधा दीनी ओप॥

दान-मान गढ़ राधिका, राधा खेल अनेक।
खोरि साँकरी सुख दियौ, राधा प्रान प्रनेक॥

सुख पहाड़ पै शोभियत, मान मंदिर धरि रूप।
पीरी प्रेम सरोवरी, भानोखर रस भूप॥

बरसाने वासीनु कैं, श्रीराधा आधार।
राधा के प्यारे सबै, राधा ही सौं प्यार॥

बरसाने रस-सिन्धु तें, प्रगटी राधा-रत्न।
'हित-परमानंद' प्रीति सौं, हिय राखौ करि जत्न॥

(श्रीहित परमानंद दास जी)

राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी! आप मेरे ऊपर दया करिये। इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है; अतः आप अपने सहज करुणामय स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये।

राधे किशोरी दया करो।

हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो॥
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो॥
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो॥

(परम पूज्य श्रीरमेशबाबाजी महाराज)

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आयी हैं। मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ। इस जगत् में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है। हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये। मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ। आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए। हे श्यामा जू! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है।